① २ ग्रह, लग्न, राशि, नक्षत्र

1) १२ राशियाँ - मेष, वृष...

2) ९ ग्रह - सू०, च०, मं०...

3) २७ नक्षत्र - अश्विनी, भर...

नक्षत्र निकालना →

भाज दमोदर दुगुन कर तिथि संयुक्त कर जोड़

कृष्ण पक्ष मे अश्विनी स्वाती शुक्ल से ले

६० घडी - १ नक्षत्र

१५ घडी - १ चरण

२¼ नक्षत्र = १ राशि

चन्द्र जिस नक्षत्र में होता है उसे ही उपर्युक्त नक्षत्र कहते हैं।

चन्द्र राशि → $\frac{\text{नक्षत्र की संख्या}}{२\frac{१}{४}}$ = राशि की संख्या

राशि →	मेष चला			वृष इवो			मिथुन		कर्क
नक्षत्र →	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
नाम का प्रथम अक्षर →	चू चे चो ला	ली लू ले लो (खुलो)	अ ई उ ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो

राशि	सिंह			कन्या		तुला		वृश्चिक	
नक्षत्र	मघा	पू० फा०	उ फा०	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
अक्षर	मा मी मू मे (मे)	मो टा टी टू (मो)	टे टो पा पी (टा)	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू

राशि	धनु			मकर		कुंभ		मीन	
नक्षत्र	मूला	पू० षा०	उ षाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू० भाद्र	उ भाद्र	रेवती
अक्षर	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी (भो)	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो [illegible]

4) लग्न →

मीने मेष मकर वृष तृत्वारे
चैत द्वारे वृष कुम्भयो
मकरे मिथुने पचमम्
शेष लग्नो बटी-घटी

सूर्योदय के समय सूर्य जिस लग्न राशि में होता है उसे उस समय में लग्न कहते हैं। (सूर्य की राशि के बारे में जाने हैं)

प्रत्येक लग्न रात में जाता है।

मेष लग्न का एक दिन में रात में जाने की अवधि - $\frac{5}{30}$ घंटे

2½ घडी = 1 घंटा

60 पल = 1 घडी

60 घडी = 1 दिन

जैसे हमने 18 वैशाख को 6.45 पर सूर्योदय हुआ तो 18:46 पर क्या लग्न होगा ?

वैशाख में सूर्य की राशि - मेष

मेष लग्न का एक दिन में रात में जाने की अवधि - $\frac{3}{30}$

18 — $\frac{3}{30}$

$= \frac{3}{30} \times 18$

$= \frac{3}{30} \times 18 \times 2$

8 घंटे

$= \frac{3}{5}$ घंटे

= 36 मिनट

मेष लग्न की कुल अवधि = 3 घड़ी = 3/2.5 = 6/5 घंटे = 1 घंटा 12 मिनट

रात में = 36 मिनट

दिन में = 36 मिनट

6:45 पर लग्न खत्म -

7:21 पर लग्न खत्म = मेष

इसी प्रकार 18:56 पर लग्न - तुला।

5) लग्न के आधार पर दिनमान

सूर्योदय से 7 लग्न बाद सूर्यअस्त होता है।

वैशाख मास के प्रथम दिन दिनमान - 30 घड़ी

ज्येष्ठ मास ——————— - 33 घड़ी

बढ़ेगी। दिन में - 3/30 घड़ी

6) 12 मास - चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, सावन, भाद्रों, अस्सु, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

(2) जन्म कुण्डली विचार

1. जातक की जन्मकुण्डली में प्रथम भाव लग्न होता है।
2. जिस राशि में चन्द्र होता है वह जातक की राशि होती है।
3. महादशा - अन्तर्दशा विचार

	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
दशा	6 व०								
अंतरदशा	3 मा 18 दि								

(3) ग्रह विचार –

सू०	1 राशि/महीने	मा०	सिंह	सिंह	मेष	तुला	
चं०	1 राशि/ 2¼ दिन	मा०	कर्क	वृष	वृष	वृश्चिक	
मं०	1 राशि/ 1½ महीने	मा०/वक्री	मेष, वृश्चिक	मेष	मकर	कर्क	
बु०	1/1 महीने	—	कन्या, मिथुन	कन्या	कन्या	मीन	
गु०	1/13 महीने	—	धनु, मीन	धनु	कर्क	मकर	
शु०	1/1 महीने	—	तुला, वृष	तुला	मीन	कन्या	
श०	1/2½ वर्ष	—	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तुला	मेष	
रा०	1/1½ वर्ष	वक्री					
के०	1/1½ वर्ष	वक्री					
	1) गति	2) मा०, व०	3) स्वराशि	4) मूलत्रिकोण	उच्च	नीच	मित्र

ग्रह के नीचस्थ से सप्तम भाव उच्चस्थ

सू०			माणिक्य	7	3/7	५/९	४/८
चं०			मोती	7	3/10	५/९	४/८
मं०			मूँगा	7/४/८	3/10	५/९	[illegible]
बु०			पन्ना	7	3/10	५/९	४/८
गु०			पुखराज	7/5/9	3/10	[illegible]	४/८
शु०			हीरा	7	3/10	५/९	४/८
श०			नीलम	7/3/10	[illegible]	५/९	४/८
रा०			गोमेद	7	3/10	—	४/८
के०			वैदूर्य (लहसुनिया)	7	3/10	—	४/८
	शत्रु	सम	कल्याण रत्न	पूर्णदृष्टि	1/4	2/4	3/4

विशेष स्पर्श प्रभाव | फल दृष्टि | कारक | स्व नक्षत्र | क्रीया

	स्व	उच्च	नीच	मूलत्रिकोण
मेष	मं०	सू०	श०	मं०
वृष	शु०	चं०	—	चं०
मिथुन	बु०	—	—	—
कर्क	चं०	गु०	मं०	—
सिंह	सू०	—	—	सू०
कन्या	बु०	बु०	शु०	बु०
तुला	शु०	शनि	सूर्य	शु०
वृश्चिक	मं०	—	चं०	—
धनु	गु०	—	—	गु०
मकर	श०	मं०	गु०	—
कुंभ	श०	—	—	श०
मीन	गु०	शु०	बु०	—

भाव -चक्र

प्रथम भाव → तन, शरीर | मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ - बलवान

द्वितीय भाव → धन, मित्र, घोड़ा, कोष, परिवार, आँख, कान, नाक, अश्वकार्य

तृतीय भाव → भाई, बहन, पराक्रम, साहस, दमा, खाँसी, दास-कर्म, हाथ, आभूषण, दृष्ट

चतुर्थ भाव → घर, सुख, माता | कर्क मीन, मकर का उत्तरार्द्ध - बलवान | कारक-चं०, बु०

पंचम भाव → विद्या, संतान, बुद्धि यश | कारक ग्रह - गुरु

षट भाव → रोग शत्रु, झगड़ा | कारक- शनि, मंगल, पशु, क्रूरकर्म, मौसी, नाना, सौतेली मॉं

सप्त भाव → पत्नि, विवाह | बलवान - वृश्चिक, दैनिक आमदनी,

अष्ठ भाव → आयु, मृत्यु | कारक - शनि, गुप्तधन, ताऊ

नव भाव → धर्म | कारक - सू०, गु० , भाग्य, दीक्षा के संबंध

दशम भाव → कर्म, भोग, पिता | मेष, सिंह, वृष पूर्वार्द्ध, धनु का उत्तरार्द्ध बलवान कारक सू०, बु०, गु०, श०

ग्यारह भाव → लाभ | कारक - गु०, आय, आमदनी, पुत्र-वधू

द्वादश भाव → हानि | कारक- श०, व्यय दण्ड, रोग, शत्रु-विरोध, मोक्ष, चोर, यात्रा

प्रथम भाव → जाति, आयु, दादी, नाना, सुख: दुख

तृतीय भाव - चाचा, मामा,

चतुर्थ भाव - वाहन, मकान, जलाशय, नानी, पिता का धन, खेती

पंचम - मामे का सुख, नौकरी, गर्भाशय

(४) अन्य

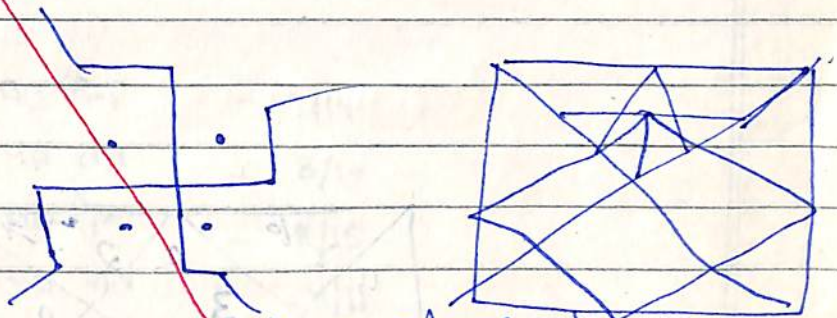
(1) अग्निवास →

$\frac{\text{तिथि + वार + 1}}{4}$ यदि। बचे स्वर्ग में अग्निवास पूर्णनाश।

— 2 — पाताल —— अर्थनाश

— 3, 0 — पृथ्वी —— सुखप्रद

(2) जन्म कुण्डली के शुरू में →



ॐ श्री गणेशाय नमः एक दन्तो महा बुद्धि सर्व अंगो गणनायका। सर्व सिद्ध करो देवा गौरी पुत्र विनायका। जननी जन्म सौख्य नमः वृद्धिनी कुल सम्पदा। पदवी पूर्ण पुण्य नमः लिखते वहे पत्रिका।

(3) गण्डमूल

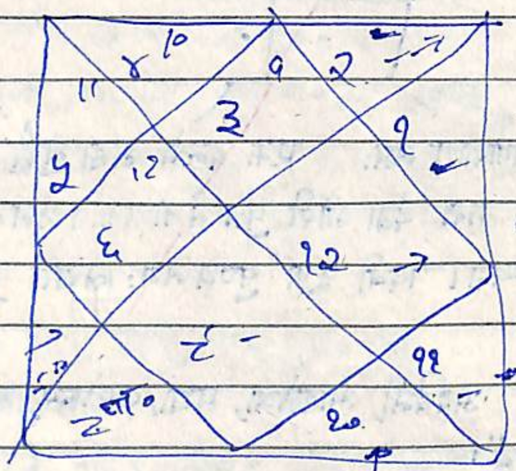
अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला, रेवती ये छः नक्षत्र गण्डमूल हैं।

(4) धरती सोई सूर्य सक्रांति से 5, 7, 9, 10, 21, 24 धरति सोई

सूर्य नक्षत्र से 5, 7, 9, 12, 19, 26 धरती सोई होती है।

(5) पँचकां- धनिष्ठा, शत, पू॰ भा, उ भाद्र, रेव (अंतिम 5 नक्षत्र।

भूमि अस्वला॰ सू॰ सक्रांति के दिन से 1, 5, 7, 11, 16, 18, 19 दिन धरति रजस्वला। पत्न, द्रव्य कृषि तालाब, गृह निर्माण कार्य आरम्भ न करें



9

(५) विवाह ~~में वर्जित काल~~
वर्जित काल

(i) अमावस्या (ii) रिक्ता तिथि - ४/९/१४ चन्द्र तिथि

(iii) (iv) क्षारवेला

दिन	सू॰	च॰	मं॰	बु	गु	शु	श॰
प्रहर	४	७	२	५	८	३	६

(iv) जन्म नक्षत्र (v) पौष मास (vi) क्रूरवार - मं॰, श, सू क्रमश अधि

(vii) भद्रा
कृष्ण पक्ष दिन - 7/14
कृष्ण पक्ष रात - 3/10
शुक्ल पक्ष दिन - 8/15
शुक्ल पक्ष रात - 4/11

(viii) तिथि मास नक्षत्र अंत घटी - ५

(ix) कुलिन

दिन	सू॰	चं॰	मं॰	बु	गु॰	शु॰	श॰
तिथि	७	६	५	४	३	२	१

(x) भद्रा
मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे (सुख)
(नागो-पाताल) मिथुन तुला कन्या धनु नागे (द्रव्य लाभ)
मीन कुम्भ अलिकेसर मृत्यु (विनाश)
त्रिभुवन मध्ये भद्रा व्याप्तम

(xi) पक्ष दग्धा

चन्द्र तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०
सू॰ संक्रांति	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक

10

२ धनु	१२ मकर	४ कुम्भ	२ मीन

द्वितीये मीने धनुश्च चतुर्थे वृष कुम्भयो
षट मेष कर्कटे च अष्टम मिथुने कन्या
दशमे अलिकेसर च द्वादश मकरे तुले (अलिकेसर = वृश्चिक, सिंह)
एतेस्तु तिथि तदा दग्धा तिथि आदि

इसके अतिरिक्त दस महादोष भी हैं जिनमें [illegible] पंचक
महत्वपूर्ण है

(i) लता (ii) पात (iii) युति (iv) वेध
(v) जामित्र (vi) बुध पंचक (vii) एकार्गल (viii) क्रांति साम्य
(ix) उपग्रह (x) दग्धा तिथि

पंचक

धारया तिथय दश अष्ट वेदाः

१२ 15 10 8 4

यदि २ तिथि को पंचक जानना है तो

(i) 2+12 = 14÷9 = 5 (पंचक)
(ii) 2+15 = 17÷9 = 8
(iii) 2+10 = 12÷9 = 3
(iv) 2+8 = 10÷9 = 1
(v) 2+4 = 6÷9 = 6

वर के ५/८/१२ सूर्य न हो
कन्या के ५/८/१२ गुरु न हो

(६) जन्म कुण्डली में ग्रह

(१) ३, ६, ११ भाव पाप ग्रह शुभ

(२) १, ४, ५, ७, ९, १० शुभ ग्रह अशुभ

(३) ६, ८, १२ भाव के स्वामी जिन भावों में बैठते हैं वे भाव अनिष्ट कारक (बुरे फल) होते हैं।

(४) ८ तथा १२ भाव में सभी ग्रह - अनिष्टकारक

(५) किसी भाव का स्वामी - पाप ग्रह - तृतीय भाव - शुभ
- ——— - शुभ ग्रह - ——— - मध्यम

(६) रा., के., अष्टमेश जहाँ बैठते हैं वहाँ बिगाड़ते हैं।

(७) २, ५, ७ भाव - अकेला गुरु - अशुभ

(८) गुरु - ६ भाव - शत्रुनाश
शनि - ८ भाव - दीर्घायु
मंगल - १० भाव - भाग्य निर्माण

(९) पू॰ चं॰, उदित बुध, शु॰, के, गु - क्रमशः एक दूसरे से अधिक शुभ
यदि ये शुभ ग्रह की राशि में हों तो - विशेष शुभ
पाप ——— - अल्प शुभ

(१०) १, ४, ७, १० भाव के ग्रह में अधिक शक्ति

(११) ५, ९ भाव - सदैव शुभ फल

(१२) ९ भाव ५ भाव से अधिक बलवान

(१३) ३, ६, १२ भाव ३, ६, १२ में ही शुभ फल। अन्यथा अशुभ

(१४) ८ तथा १२ भाव में पाप ग्रह - विनाश (जिस भाव में)

(१५) ३, ६, १०, ११ - रा॰ के॰ श॰ - शुभ

(१६) ११ भाव - क्रूर - विशेष शुभ
शुभग्रह - शुभ

(१७) १,४,७,१० - गुरु - ।लाख दोष दूर - केन्द्राधिपति दोष
(१८) ——— - शुक्र - १० हजार केन्द्राधिपति दोष
(१९) १,४,७,१० बुध - १हजार ———
(२०) लग्न या लग्नेश - शुभ - अनेक दोष दूर
(२१) केन्द्र - पाप ग्रह - शुभ
——— - शुभ ग्रह - अशुभ
(२२) २ तथा १२ भाव - अस्थिर अधिकार
(२३) लग्नेश से चतुर्थेश, पंचमेश से ७शे, ७ से दशमेश शुभाशुभ
(२४) ३ से ६, ६ से ११ के स्वामी अधिक अशुभ
(२५) ३,६,११ भाव के स्वामी - अशुभ फल
(२६
कुण्डली में ग्रह अपने से २,३,४,१०,११,१२ - तात्कालिक मित्र
——— १,५,६,७,८,९ - ——— शत्रु

गृहारम्भ

सबसे अच्छा योग – त्रिपुष्कर
या फिर – द्विपुष्कर योग
यदि ये योग काफी दूर हो और जल्दी हो तो पंत्री में देखो
कि + का निशान कहाँ है यदि ये भी दूर है तो देखो कि
किस दिन धरती जागती है।

कुछ अन्य बातें

1) मे०, कर्क, तुल, मक, सिं को गृहारम्भ न करें। 1, 3, 4
2) रिक्ता (4, 9, 14) को भी ——
3) गृह प्रारंभ कुण्डली में 3, 6, 11 पापग्रह ——
4) —— 6, 8, 12 शुभग्रह ——
5) मंगल युक्त हस्त, पुष्य, रेव, मघा, पूर्वा, मूला – मंगलवार – गृहारम्भ न करें
6) शनि —— पू० भा०, उ० भा०, ज्ये, अनु, स्वा, भर – शनिवार – गृहारम्भ किसी भी हालत में न
7) गृहारम्भ के दिन सू० चं० बु० अशुभ न हों तो गृहारम्भ करें
8) गृहारम्भ मिथु, कन्या, धनु, मीन के सूर्य में ——

घर का देवस्थान – ईशान – अत्यंत शुभ
शौचालय – ईशान – अशुभ (तनाव)
—— – नैऋत्य – शुभ
जल सम्बंधी इकाई – ईशान – शुभ
—— – आग्नेय अशुभ
रसोई – ईशान – अशुभ (तनाव)
—— – आग्नेय – शुभ

भारी समान — वायव्य — अशुभ

———— नैऋत्य — शुभ

खाली जगह ———— अशुभ

भारी समान — नैऋत्य — [illegible]

उत्तर - पूर्व — ईशान

उत्तर - पश्चिम — वायव्य

दक्षिण - पूर्व — आग्नेय

दक्षिण - पश्चिम — नैऋत्य

ਏਹੇ ਏਨੂੰ ਲਾਣਾ ਸ਼ਮਸ਼ਾਨੀ ਤੇ ਸ਼ਕਲ਼ ਦੁਗਾਈ ਮੁਠ ਮਚਾਰ ਦੀ ਯੰਤੇ ਤਸ਼ਾਰਾ
ਅਸ਼ਾ ਤੂਮ

دھ ڈ کا سا ہے - [illegible]، [illegible] جھینٹ لوان ، [illegible]
پیپل سرول، کالی بیری، [illegible]، [illegible] [illegible] اندر
جو ہے

गृहारम्भ में

1) गृहारम्भ के दिन सू० निर्बल नीच — गृह के स्वामी का मरण

———— चं० अस्त, निर्बल, नीच — स्त्री ————

———— गु० ———— — धन का नाश

2) नींव भरते समय

सू० — मिथुन — मृत्युदायक

सू० — कन्या — रोग

सू० - धनु - हानिकारक
सू० - मीन - रोगप्रद

60 प्रति - विकला
60 विकला - 1 कला
60 कला - 1 अंश
30 अंश = 1 राशि

ग्रह की सम राशि में ⇒ बाल अवस्था = 30-25 अंश
कुमार - 24-19 अंश
युवा - 18-13 अं
वृद्धा - 12-7 अं
मृत - 6-1 अंश
विषम राशि ⇒ बाल अवस्था - ~~30-25~~ 1-6 अंश
कुमार - 7-12 अंश
युवा - 13-18 अंश
वृद्ध - 19-24 अंश
मृ - 25-30 अंश

बाल ग्रह - 1/4 फल   मृत - निष्फल
कुमार - 1/2 फल
युवा - पूर्ण फल
वृद्ध - दुष्ट फल

ग्रहों का वर्णन

१) चन्द्र- जल, मोती, चाँदी, वेश्या, दाई, मछुवे, औषध, नेत्र-रोग, पीलिया, गाँठ आदि का प्रतिनिधित्व

२) मंगल- पराक्रम, झूठ, लाल रंग की वस्तुएं, शस्त्रघात, अग्निभय, चोर कर्म, खसरा, शुभ स्थान- 3/6/11

३) बुध-

सू० - धनु - हानिकारक

सू० - मीन - रोगप्रद

60 प्रति - विकला

60 विकला - 1 कला

6 कला - 1 अंश

30 अंश = 1 राशि

ग्रह की सम राशि में > बाल अवस्था = 30-25 अंश

कुमार - 24-19 अंश

युवा - 18-13 अं

वृद्धा - 12-7 अं

मृत - 6-1 अंश

विषम राशि > बाल अवस्था - ~~30-25~~ 1-6 अंश

कुमार - 7-12 अंश

युवा - 13-18 अंश

वृद्ध - 19-24 अंश

मृ - 25-30 अंश

बाल ग्रह - $\frac{1}{4}$ फल   मृत - निष्फल

कुमार - $\frac{1}{2}$ फल

युवा - पूर्ण फल

वृद्ध - दुष्ट फल

ग्रहों का वर्णन

१) चन्द्र- जल, मोती, चाँदी, वेश्या, दाई, मछुऐ, औषध, नेत्र-रोग, पीलिया, गाँठ आदि का प्रतिनिधत्व

२) मंगल- पराक्रम, झूठ, लाल रंग की वस्तुऐं, शस्त्राघात, अग्निभय, चोर कर्म, खसरा, शुभ स्थान- 3/6/11

३) बुध-

शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग					
चर						
रोग						
काल						
लाभ						
उद्वेग						
~~लाभ~~ शुभ						

उत्तम चौघड़ियाँ - अमृत, शुभ, लाभ, चर
खराब चौघड़ियाँ - उद्वेग, रोग, काल

यात्रा

शुभ तिथियाँ (भद्रादी दोष रहित) - दोनों पक्षों की २, ३, ५, ७, १०, ११, शुक्ल पक्ष की १३ तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा

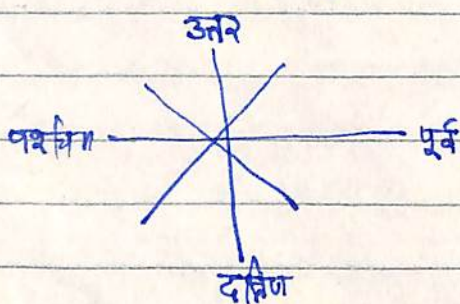
शुभ नक्षत्र - अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्र, धनि, रेव

मध्यम नक्षत्र - रोहि, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, ज्ये, मूला, शत

शुभ ~~दिशाशूल~~ → ~~सोम~~ → पू०, उत्तर, आग्नेय, सोम - पश्चिम, दक्षि, वायव्य, मं० - दक्षिण, पूर्व, आग्नेय
रविवार
बु० - दक्षिण, पूर्व नैऋत्य, गु० - पूर्व, उत्तर, ईशान, शु० - पू०, उ०, ईशान
श - पश्चि, दक्षि, नैऋत्य

समयशूल → उषाकाल को पूर्व को नहीं जाना चाहिए।
गोधूलि को पश्चिम ————
अर्द्धरात्रि को उत्तर ————
मध्यान्तकाल को दक्षिण ————

योगिनी → पू०, उ०, अ०, द०, प०, वा०, ई० पड़वा नवमी से चली आई



योगिनी बाएँ - दुःख
योगिनी पीछे - मनवांछित पूर्ण
योगिनी दाहिने - धन
योगिनी सम्मुख - मृत्यु

दोहद- यदि यात्रा करना बहुत आवश्यक है तो। पदार्थ खाकर, यदि योग्य न हो तो स्पर्श करके अथवा स्मरण करके दोष शान्त होता है।

दिग्दोहद- पूर्व में घी, दक्षिण में तिल और भात, पश्चिम में मत्स्य, उत्तर में दूध

यात्रा में निषेध- ~~सोम~~ रवि- पश्चिम, वायव्य, सो- पू०, उत्तर, आग्नेय मं० - ~~दक्षिण, पूर्व, आग्नेय~~ उत्तर, पश्चिम, वायव्य
~~बु - दक्षिण, पूर्व, नैऋत्य, गु०, पूर्व, उत्तर ईशान, शु० - पू०, उत्तर, ईशान, श० पर, दक्षिण, नैऋत्य.~~

बु० उत्तर, पश्चिम, ईशान, गु० दक्षिण - पूर्व नैऋत्य, शु० - पश्चिम, दक्षिण, नैऋत्य
श० - पूर्व, उत्तर, ईशान।

यदि यात्रा के लिए शुभ मूहुर्त न बने तो चौघड़ियाँ देख लेनी चाहिये मान लो सूर्योदय = ६:०० बजे

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु		
६:०० से ७:३० तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
७:३० से ९:०० तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत			
९:०० से १०:३० तक	लाभ	शुभ	चर	काल			
१०:३० से १२:०० तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ			
१२:०० से १३:३० तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग			
१३:३० से १५:०० तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग			
१५:०० से १६:३० तक	रोग	लाभ	शुभ	चर			
१६:३० से १८:०० तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

1) गण्डमूल में उत्पन्न जातक के नक्षत्र के 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र काल में शांति करवानी चाहिए। यदि शांति न हो पाये तो जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभ है

2) पंचकों के समय दक्षिण दिशा की यात्रा, मकान, झोंपड़ी, दुकान की छत डालना, चारपाई पलंग बुनना, मुर्दा जलाना, नींव की खुदाई, वीतारम्भ आदि स्तम्भारोपण, तांबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना, छत डालना कूप र

शनि विचार

3) शनि-वक्री अवस्था—शुभाशुभ फल में तीव्रता

शनि साढ़े सति एवं ढैया आदि से प्रभावित जातक की कुण्डली में शनि अशुभ तो विशेष अशुभ होगा। यदि मित्र तथा स्वक्ष हो तो अशुभ कम हो सकता है। ~~वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ लग्न एवं राशि वाले~~

राजा, मंत्री देश

अन्धाक्ष	रो०	पुष्य	
सुलोचन	कृ०	पु	
मध्याक्ष	भ०	आ	मघा
मन्दाक्ष	अश	मृ	आश

शीघ्र मिलेगी
नहीं मिलेगी
पता लगाने पर भी नहीं मिले
बहुत यत्न करने पर मिलेगी

अन्धाक्ष में वस्तु पूर्व दिशा
सुलोचन उत्तर
मध्याक्ष में वस्तु पश्चिम में दक्षिण
मन्दाक्ष में दक्षिण

विवाह में प्रमुख समय दोष

1) गुरु अस्त - दोष (3 दिन पूर्व, बाद त्यागें)
2) शुक्रास्त - दोष ( )
3) चन्द्रग्रहण - दोष ( )
4) ग्रहणशूल - उत्तरपाद में नक्षत्र लगने के पश्चात दस दिन दोष
5) त्राह्र - दोष
6) भीष्म पंचक - पंत्री में
7) पौष मास
8) होलाष्टक - दोष (8 दिन) पूर्व - बाद में होली के।

गुरु आदि अस्त

गुरुअस्त, शुक्रास्त, अधिमास में वर्जित कर्म

गृहारम्भ (निर्माण) एवं प्रवेश, कुआं, तालाब का निर्माण, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, नामकरण, मुण्डन, यज्ञोपवीत, कर्णवेध, समावर्तन विवाह, वधू प्रवेश, गोदान, देव प्रतिष्ठा स्थापन, चातुर्मास्य प्रयोग, अग्निहोत्र प्रारम्भ, दीक्षा, सन्यास

ज्येष्ठ जेठे लड़के - लड़की, के जन्म, मास नक्षत्र, दिवस पर विवाह अशुभ

रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र 5/13/23 हो काल का मृत्यु 10/18 काल की जाए, मुख्य पाचाद में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोग ग्रस्त व्यक्ति की मृत्यु

28

वर्तमान तिथि + वार + नक्षत्र की संख्या [struck] जो प्राप्त हो
उसमें वर्तमान प्रहर की संख्या जमा करें तथा 4 से गुणा करके
7 द्वारा भाग दें

1 बचे खोई हुई वस्तु भूमि में गड़ी
2 बचे नष्ट वस्तु किसी बर्तन में रखी
3 बचे पानी में गिरी
4 बचे भूमि के ऊपर स्थान में छिपाई
5 बचे भूसे में छपाई
6 बचे नौकर में छिपी
० बचे राख में छिपी

लड़के को 3, 6, 10, 11 सूर्य शुभ, 1, 2, 5, 7, 9 में पूज्य (पूजा करना)
तथा 4, 8, 12 त्याज्य। कन्या के 1, 3, 6 10 गुरु साधारण: पूज्य
4, 8, 12 विशेष रूपेण पूज्य,

पंच स्वयं सिद्ध मुहूर्त - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया,
विजयदशमी, दीवाली, बसंत पंचमी। परंतु विवाह के लिए नहीं है

अभिजित में सभी कार्य किए जा सकते हैं
यदि 12 सितम्बर 2003 को अभिजित जानना हो तो
दिनमान + 30।50
अर्ध 15।25 = 6 घंटे 10 मिनट
इसका 6 घंटे 6:20 + सूर्योदय (6:15) =

21

१२ बजकर २८ मिनट अभिजित का मध्यमान

मध्यमान से १ घटी (२४ मिनट) तथा २८ मिनट पश्चात आगमित होगा।

शुक्र नीच, शत्रु राशी का होकर ६ या ८ भाव में अस्त हो विवाह में दोषकारक नहीं

त्रिकोणगत गु०, ११ वें सू०, अथवा लग्न या चन्द्र वर्गोत्तम या वर्गोत्तम नवांश में हो तो सब दोषों का नाश

विवाह में लग्न शुद्धि विचार

1) तिथि को शरीर, चन्द्र को मन, योग व नक्षत्र को शारीरिक अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है

लग्न बल के बिना जो कोई भी शुभ कार्य किया जाता है उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है।

2) विवाह में विशुद्ध लग्न होने के स्थिति होने में वर- कन्या के मेलापक, तिथि, वार, इत्यादि, पति पित कुछ होने पर दोषापत्ति का परिहार हो जाता

लग्न स्थान में च०, सू०, श०, मं०, रा०,के० आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शु०, च०, लग्नेश न हो तथा ८ स्थान में च०, मं०, शु०, गु०, शु०, व लग्नेश न हों, ७ कोई ग्रह न हो, यदि गु० या चन्द्र हो तो दोषादि संशांति हो जाती है। इन सब बातें को ध्यान में रखकर ही लग्न शुद्धि होती है।

१२ - शनि, १०- मं०, ३ स्थान में शुक्र, लग्न में चन्द्र और पाप ग्रह लग्न की शुद्धता को दूषित करते हैं।

१२वें श०, ३ गु०, १०मं० यथोचित दान से शांत हो जाते हैं।
विवाह लग्न से ३, ६, ८, ११वें सूर्य, ३, ६, ११ रा०, के०, शनि भी शुभ होते हैं
३, ६, ११वें मं०, २, ३, ११वें च०, ३, ६, ७, ११ और ८वें स्थान को छोड़कर अन्य भावों में शुक्र-शुभ तथा ७, ८, १२वें को छोड़कर अन्य स्थान में बु०, गु०-शुभ → नीचे देखें

जन्म लग्न व जन्म राशि का लग्न-शुभ, जन्मराशि से ३, ६, ११वां विवाह लग्न-शुभ वाचक (वर-कन्या की जन्म राशि, लग्न से ८, २, १२ राशिस्थ लग्न अशुभ परंतु इसके परिहार स्वरूप जन्म राशि या जन्मलग्न का स्वामी, विवाहलग्न का स्वामी समान हों, अथवा मित्र ग्रही हों, तथा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी केन्द्र में स्थित से तो अष्टम का दोष दूर)
कुर्तरि दोष → लग्न से पाप ग्रह मार्गी - १२ भाव
क्रूर ग्रह - वक्री - २ भाव में
तो कुर्तरि दोष हुआ यह योग दारिद्र्य, शोक, मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है
परिहार → कर्तरि दोष कारक ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री, अस्तगत हो तो परिहार। यदि चं०, शु०, बु० इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भाव में हो तो परिहार

21

1) अष्टम भौम का परिहार- जंगल अस्त, नीच, शत्रु (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो तो दोषकारक नहीं, परंतु लग्नेश होकर अष्टगत नहीं होना चाहिए

2) 6, 8 चन्द्र का परिहार, नीच राशि, नीच नवांशगत चं. 6, 8, 12 के स्थानस्थ होने दोषपूर्ण नहीं माना गया है। परंतु लग्नेश होने से ~~[illegible]~~

3) षष्ठाष्टम नहीं हो तो तृप, कन. एवं पूर्ण चं लग्न में दोषकारक नहीं होता

4) नीच या शत्रु राशिगत बु., 6, 8 हो। दोषकारक नहीं। परंतु लग्नेश होकर इन भावों में न हो

5) शुभ ग्रह - 1 ग्रह - अशुभ न हो

6) लग्न में केन्द्र, त्रिकोण - मं. बु., गु. तथा 11 भाव में चं. शु. अथवा सप्तमेश - अनेक दोषों का नाश

7) ~~विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध होने पर विवाह नक्षत्र सर्वथा त्याज्य है। परंतु बु., गु. आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध~~

बड़े लड़के लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास, जन्म नक्षत्र, तिथि, लग्न में वर्जित

तीन ज्येष्ठ (बड़ा लड़का, बड़ी लड़की, ज्येष्ठ मास) पूर्ण तः वर्जित। आवश्यकता पर ज्येष्ठ मास में कृत्तिका से सूर्य निकल जायें कि सूर्य दानादि करके विवाह हो तो कोई हानि नहीं। ज्येष्ठ मास की भांति अगहन लड़का लड़की का विवाह को मार्गशीर्ष में त्याज्य।

सगे भाई-बहन का विवाह ६ मास के भीतर नहीं करना चाहिए यदि संवत परिवर्तन हो तो कोई दोष नहीं ॥ विवाह के बाद ६ महीने के भीतर मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। कन्या विवाह के पश्चात पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ ॥ दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से-अशुभ। एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह-अशुभ दो सगे भाई-बहन का दो सगे भाई बहनों से विवाह-अशुभ जुड़वे भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक मण्डप पर शुभ। यह ६ महीने का निषेध ३ पीढ़ी तक के मनुष्य के लिए

विवाह विचार

	रवि	च०	मं०	गु० बु०	के० शु०	शु०	श
नवीन वस्त्र धारण	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अतिशुभ	अशुभ
नवीन आभूषण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल मर्दन	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	विशेष शुभ	शुभ	विशेष शुभ
रोग मुक्त	मध्यम	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	—	~~[illegible]~~ मध्यम
शय्या शयन	अशुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ	—	मध्यम
मुकदमा	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ

यात्रा में शुभ ~~[illegible]~~ दिशा

प्रसूति और पातक और सूतक क्या है?

स्त्री जातक विषय ⇒

1) यदि कन्या की कुण्डली में 7 भाव, गुरु के साथ श० हो तो कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है

31

२) यदि शुक्र, मं०, बु० लग्न में हो और गुरु १२वें भाव में हो तो कन्या का विवाह दीर्घायु में

३) जिस स्त्री के जन्म काल में शुभ अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह तो उसके दो विवाह होते हैं।

४) यदि स्त्री के ७ भाव में शुक्र अथवा अन्य पाप ग्रह तो वैवाहिक सुख नाश

५) यदि सप्तम भाव में बु० तथा शनि की युति स्त्री का पति नपुंसक

६) ५ भाव में बुध हो तो स्त्री की एकवार संतान होकर पुनः संतान में बाधा

विष कन्या योग

१) शनिवार, आश्लेषा, द्वितिय तिथि — तीनों हो और कन्या — विष कन्या

२) मंगल, शतभिषा, द्वादशी — ——— ———

३) यदि ५ भाव में [illegible] हो तथा गु० पंचम भाव में हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री के ३ पाप से संतान

माला योग

यदि कु० में बु०/गु०/शु० ४, ७, १० के स्थान पर स्थित हों और शेष ग्रह इनसे भिन्न भावों में पड़े हों तो माला योग होता है और धरजातक धनवान, वस्त्राभूषणों से युक्त, पद से अधिक स्त्रियों से प्रेम, उच्च अधिकार होता है। चुनाव Competition में प्रायः सफल

सू०	शुष्क	अग्नि	मध्यम
च०	जल	जल	दीर्घ
मं०	शुष्क	अग्नि	ह्रस्व
बु०	क्लीब	पृथ्वी	म
गु०	—	तेज	म या ह्र
शु०	—	जल	ह्र
श०	शुष्क	वायु	दी
रा०	—	—	दी
के०	—	—	म ह्र

मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिंह	६	७	८	९	१०	११	१२
अग्नि	पृथ्वी	वायु	जल	अग	पृथ	वा	ज	अ	पृ	वा	जल
ह्रस्व	ह्र	मध्य	मध्य	दीर्घ	दी	दी	दी	म	म	ह्र	ह्र

1) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जलतत्व ग्रह की स्थिति हो तो जातक मोटा या पुष्ट

2) लग्न या लग्नाधिपति ग्रह जल राशिगत हो शरीर स्थूल एवं पुष्ट

3) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि और अग्नि ग्रह उसमें स्थित हो तो व्यक्ति शक्तिशाली, बली परंतु देखने में दुर्बल

4) पृथ्वी राशि का लग्न तथा स्वामी ग्रह जल राशि शरीर साधारणतः स्थूल

5) पृथ्वी राशि लग्न ग्रह पृथ्वी राशि शरीर शरीर स्थूल एवं दृढ
(लग्नाधिपति)

६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्व की हो और ग्रह पृथ्वी तत्व का ग्रह तो जातक का कद छोटा

७) यदि लग्न वायु तत्व राशि वाला उसमें वायु ग्रह जातक दुर्बल किन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला

८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्वों की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशि या जल की ~~तो हड्डियां साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट~~ शरीर स्थूल

९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्व की राशि और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो तो हड्डियां साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट

जातक का कद राशि के अनुसार होता है लग्न की

---

१) यदि जातक के जन्म लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में शु हो तो सि में दाग

२) जन्म लग्न में मं०, शु० और चं० हो जातक को जन्म से २रे या छठे वर्ष सिर में चोट से ~~घाव~~ घाव

३) जन्म लग्न में शु० और आठवें स्थान में राहु तो मस्तक या बाएं कान में चिन्ह

४) यदि लग्न में गु०, सप्तम में श० और अष्टम में पापग्रह हो तो जातक के बाएं हाथ में चिन्ह या लग्न में गुरु या शुक्र तथा अष्टम में पापग्रह हो तो भी

५) ५, ८ राशि हो और शुक्र की दृष्टि तो जननेन्द्रिय के समीप तिल

६) ५, ८ भाव में शुक्र, बुध अष्टम में गुरु, लग्न या चतुर्थ में शनि पैर पर चिन्ह

७) चतुर्थ स्थान में राहु या शुक्र में से एक ~~ग्र~~ स्थित हो और लग्न में शनि मं० स्थित हो पांव के तलवे में चिन्ह ग्रह

८) ~~अष्टम भाव में श~~ दूसरे भाव में शु०, अष्टम भाव में श०, तीसरे में मंगल जातक की कम

गोरख पतरा

यात्रा मुहूर्त

तिथियों

पौष	माघ	फाल्गु	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भाद्र	अश्व	का	मार्ग	बहुत सुख अर्थ पू
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	महाभय, जीवनाश,
2												कामना, सिद्धि, ३
3												क्लेश व जीवनाश,
4												वस्तु लाभ, संकट
5												घर की चिंता मित्र संकट,
6												भाग्योदय, मित्रप्राप्त,
7												बहुत वर्षा, जीवनाश
8												आशा पूर्ण
9												सौभाग्य
10												क्लेश किंतु जीव
11												धन, मित्रलाभ,
12												

	कृष्ण	
कलेश	1 पहर	2 प्रहर
पछतावा	अर्थ	सुख
कार्य पूर्ण	भय	क्लेश
	लाभ	सुख
कुशलक्षेम	क्लेश	राज
मित्र, मित्र मिले आये	संकट	क्लेश
घर आते	संकट	क्लेश
स्वजन समाचार आते	विनाश	लाभ
	शून्य	शून्य
	लाभ	भाग्य
	लाभ	सम्पूर्ण
नाश नहीं	मरण	अर्थ
[illegible]	मरण	सुख

†) पितृ परोक्ष ज्ञान

जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्र न देखता हो तो बालक को जन्म समय उसका पिता घर में था, यदि सूर्य ८, ९, ११, १२ भाव में चर राशी का और लग्न को न देखे तो पिता दूसरे देश में। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सू० स्थिरराशी में पिता घर में नहीं था परंतु देश में था। द्विस्वभाव सूर्य तो मार्ग में था परंतु ये योग तभी है जब चन्द्र न देखता हो लग्न को।

मेष-चर, वृष-स्थिर, मिथुन-द्विस्वभाव क्रमशः

†) माता पिता का अरिष्ट योग

पिता के लिए सू० तथा दशम भाव माता के लिए चन्द्रमा तथा ४ स्थान से विचार।

यदि जातक की जन्मकुण्डली में सू० के साथ अथवा दशम भाव में पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों या सू० पापग्रहों के बीच तो पिता का कष्ट। यदि सू० से ४/५/८ स्थान में पापग्रह, शुभ ग्रह कोई भी शक्ति को देकर

च० के साथ २/१२ स्थान में व ४/५/८ स्थान में क्रूर ग्रह हों शुभ न हों तो माता को कष्ट

31

ग्रहों से रोग

1) ~~स्वयं~~ - गुरु, चं० - कफ, शु०, चं० - वात कफात्मक
श०, रा०, के० - वात रोग, बु - त्रिदोष, सू० मं० - पित्त रोग.

सू० — दिन इतवार, कृष्ण पक्ष ~~पुरुष~~ पुरुष राशि - बलवान
चं० — सो., शुक्ल, स्त्री
मं० — मंग, कृष्ण पु०
बु — शुक्ल

मे० चर, वृ - स्थि, मिथुन - द्विस्व

सूर्य → सूर्य सदैव मार्गी और क्रूर उदय ग्रह है। इसे काल पुरुष की आत्मा कहते हैं। यह गुलाबी वर्ण, वृद्ध (50 वर्ष) पुल्लिंग, क्षत्रिय, सत्व गुण, अग्नितत्व, पित्त प्रकृति, स्थिर, अश्व-जातक, पूर्व दिशा का स्वामी।

जातक की आत्मा, नेत्र, हड्डी, शारीरिक शक्ति, आरोग्य, व्यक्तित्व, प्रभाव, ऐश्वर्य, आचरण, इच्छा अधिकार, पित्त, मेरुदण्ड, स्नायु, उदर, मस्तिष्क, हृदय, रक्त फुसफुस, जठराग्नि, मंदाग्नि, भगन्दर, अर्श, हैजा, क्षय, सिर-दर्द, नेत्र-विकार, अपस्मार, राजा, सरकार, अधिकारी सैनिक, ब्राह्मण, प्रसिद्ध व्यक्ति, औषध विक्रेता, जौहरी, स्वर्णकार, धातु तांबा, स्वर्ण, धान्य, लाल चन्दन, ऊन, तृण, नारियल, बादाम, लाल रंग की वस्तुओं पर अधिपत्य

ग्रह परिषद में राजा, उग्र क्रूर, सिंह का स्वामी, उच्च मेष, नीच तुला, सिंह मूलत्रिकोण

च०, मं०, गु० - मित्र

रा०, के० शु०, श० - शत्रु

बु० - समभाव

पद 3/10 - $\frac{1}{4}$

5/9 - $\frac{2}{4}$

4/8 - $\frac{3}{4}$

7 - पूर्ण

२२ से २५ वर्ष तिरोध दोष निवारण हेतु – माणिक्य

रत्तिका उत्तरा का लमुर्ती ३ बा०, – रविवार

जन्म कुण्डली में सूर्य जहां बैठता है वहां से छठे भाव अन्य कोई ग्रह – बुध, शुक्र, शनि कभी बंध नहीं। यह १ मास में संचरण

~~अन्य – स्वयं भागी तथा बाल पुरुष में स्त्री पदस्थिलिंग है~~

~~कृष्ण पक्ष की त्रैतालीस चतुर्दशी – पूजा~~

सभी तात्कालिक – मित्र – 2, 3, 4, 10, 11, 12

शत्रु – 1, 5, 6, 7, 8, 9

उदयी ग्रह – सुखदायक

वक्री ग्रह – परदेश

मार्गी – आरोग्य

अस्त – धन सम्मान का नाश।

[signature]

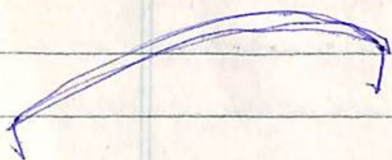
$2\frac{1}{2}$ 30। अंश।

ग्रहों के बल

1) नैसर्गिक बल- शनि से मंगल दुगुना बल, बुध 3 गुना गुरु चार गुना, शुक्र पांच गुना, चन्द्र 6 गुना, सूर्य 7 गुना।

(2) दृष्टि बल → शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ने से दूसरा ग्रह बली हो जाता है।

(3) भाव बल → उच्च राशी ग्रह पूर्ण बली
मूल त्रिकोण $\frac{3}{4}$ बली
स्व राशी $\frac{1}{2}$ बली
मित्र ग्रह - $\frac{1}{4}$ बली
समग्रह - $\frac{1}{8}$ बली
नीच राशी - बलहीन
शत्रु राशि - $\frac{1}{2}$ बलहीन



(4) चेष्टा बल → सूर्य अथवा चन्द्र मकर से मिथुन तक किसी भी राशि में हो तो चेष्टा बली। यदि चन्द्र के साथ मं०, बु०, गु०, शु०, श० हो तो पांचों ग्रह बली। क्रूर ग्रह सूर्य के साथ कर्क से धनु तक बली।

41

(6) चं०, शु० - सम राशि - बली
अन्य - विषम - बली
लग्न में - बु०, गु
(10) चतुर्थ - चं०, शु०
सप्तम - शनि, राहु, केतु
दशम - सू०, मंगल

(7) रात्रि में - चं०, मं०, शनि
दिन में - सू०, बु०, शु०
हरसमय गुरु बली

(8) क्रूर ग्रह - कृष्ण पक्ष, सौम्य ग्रह - शुक्ल पक्ष

(9) सू०, बु०, गु० एक राशि - 1 माह
मं०

विषम राशि प्रथम 6 अंश ग्रह - बाल
अगले 6 अंश - कुमार, युवा, वृद्ध, मृत

सम राशि में उल्टा
बाल अवस्था - ग्रह $\frac{1}{4}$ मृत - मृत्यु तुल्य फल अथवा निष्फल
कुमार - $\frac{1}{2}$
युवा - पूर्ण
वृद्ध - दुष्ट फल

सूर्य से 2, 11, 12 भाव वाला ग्रह - ~~शी~~ शीघ्री

3 भाव - सम

4 भाव - मंद

5, 6 - मार्गी

7, 8 - वक्री

9 - अति वक्री

10 - मार्गी

1 - अस्त सिवाय बुध

क्रूर ग्रह वक्री - ~~अतिक्रूर~~ महाक्रूर

शुभ — — — शुभ

पू० च०, शुभ ग्रहयुक्त बु०, गु०, शु० - शुभ

सू०, क्षीण च०, मं०, पाप ग्रहयुक्त बु०, श०, रा० के० - अशु

सू० मं० श० - क्रूर

शनि, केतु, मंगल - पाप ग्रह

स्थान बल ग्रह उच्च मित्रादी

~~सुख-दुख के कारक ग्रह~~

~~प्रथम भाव - मुख, दंत, दाढ़, गला, जीभ, मस्तक~~
~~द्वितीय भाव - दाहिनी नेत्र~~
~~तृतीय भाव - दाहिना कान, गर्दन, हाथ~~
~~चतुर्थ भाव - पेट, गुर्दा~~
~~पंचम ~~स्थान भाव~~ - कमर के ऊपर का भाग।~~
~~षष्ठ - गुह्य स्थान, दाहिना पांव~~
~~सप्तम - देह का मध्यभाग नाभी~~
~~अष्टम - गुह्य-स्थान, पांव बायां~~
~~नवम -~~

यदि कुण्डली के कौन-२ से भावों ग्रह देखता है। उन बच्चे होते हैं। प्रथम ३ भावों का।

प्रथम ४ वर्ष मृत्यु - मात का पाप
८ से १२ - पूर्वजन्म का पाप
८ वर्ष तक - बालारिष्ट
८ से २० - योगारिष्ट
२० से ३२ - अल्पायु

बच्चे की कुण्डली में ४, १० शुभ ग्रह - भाव का
सुखपूर्वक प्रसव

1) यदि लग्न या चन्द्र से 4, 7 में क्रूर ग्रह माता को प्रसव के समय अति कष्ट। 4 व 7 भाव परेशानी,
~~[illegible]~~
मं, अति क्रूर ग्रह की दृष्टि - आप्रेशन द्वारा प्रसव

2) लग्न से 6, 8, 12 भाव क्रूर ग्रह इन स्थानों में शुभग्रह न हो तथा चं०, शुक्र पाप ग्रहों के मध्य हो तो बच्चे सहित माता को मृत्यु तुल्य कष्ट
3) लग्न में पाप ग्रह, चं पाप ग्रह के साथ, शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट ~~[illegible]~~
4) लग्न एवं अष्टम भाव मे पाप ग्रह, बारहवें में क्षीण चं शुभ ग्रह न देखे तो भी बालारिष्ट योग
5) चं 4/6/8/12 भाव तथा पाप अरि पाप ग्रह से आयारिष्ट
6) यदि लग्न का स्वामी 6वें भाव, शनि, राहु, मंगल आदि पाप ग्रह युक्त हो वर्ष विशेष अरिष्ट

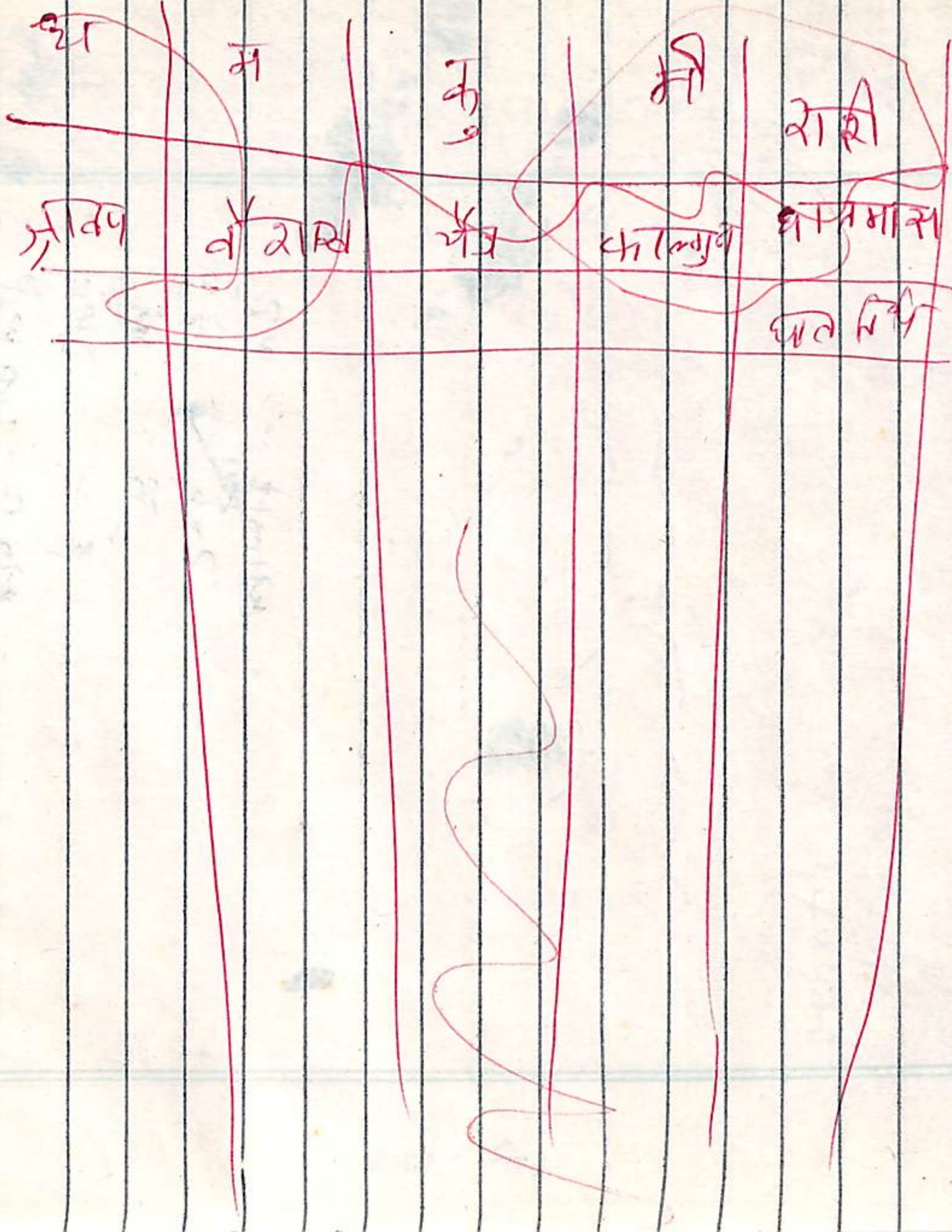
तीन कन्याओं के पश्चात लड़का
तीन लड़को —— कन्या तो त्रिखल दोष
जो लड़का, पिता, नानक पक्ष के लिए हानी, कन्या माता के लिए अति कष्टकारक। जन्म दिन के आस पास त्रिखल पूजा

गा० उड़ल

आकृति → मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न जातक प्रायः संघर्षशील प्रथम वय पिता के लिए कष्टकारी दूसरे में पाजूलवती

रात में शुभ कार्य आरंभ न करें

मेष	वृष	मि	क	सि	क	तु	वृ
कार्तिक	मार्ग	आषाढ	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	अश्विन
१/६/११	५/१०/१५	२/७/१२	३/८/१३	५/१०/१५	४/६/११	१/६/११	३/८/१३


राशी
वैशाख
चैत्र
फाल्गुन

बाल मरा - $\frac{1}{4}$ फल

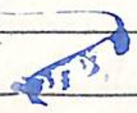
कुमार - $\frac{1}{2}$

पौढ - पूर्ण

वृद्ध - कष्ट

मृत - निष्फल



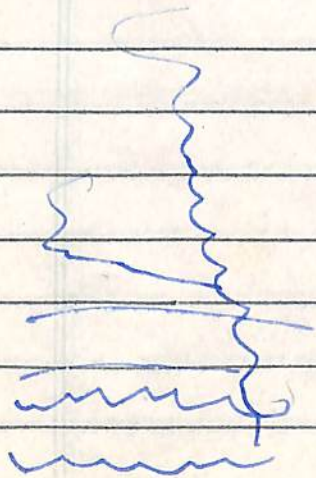


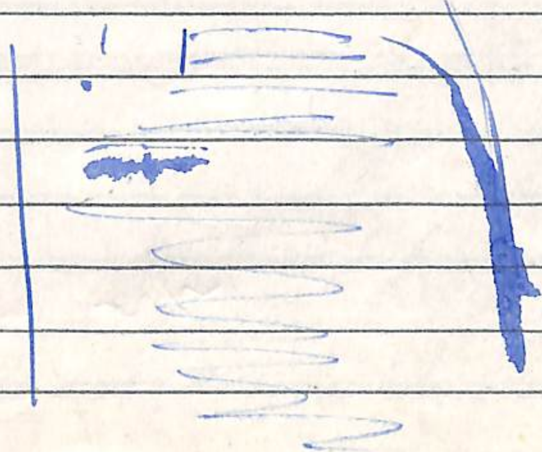


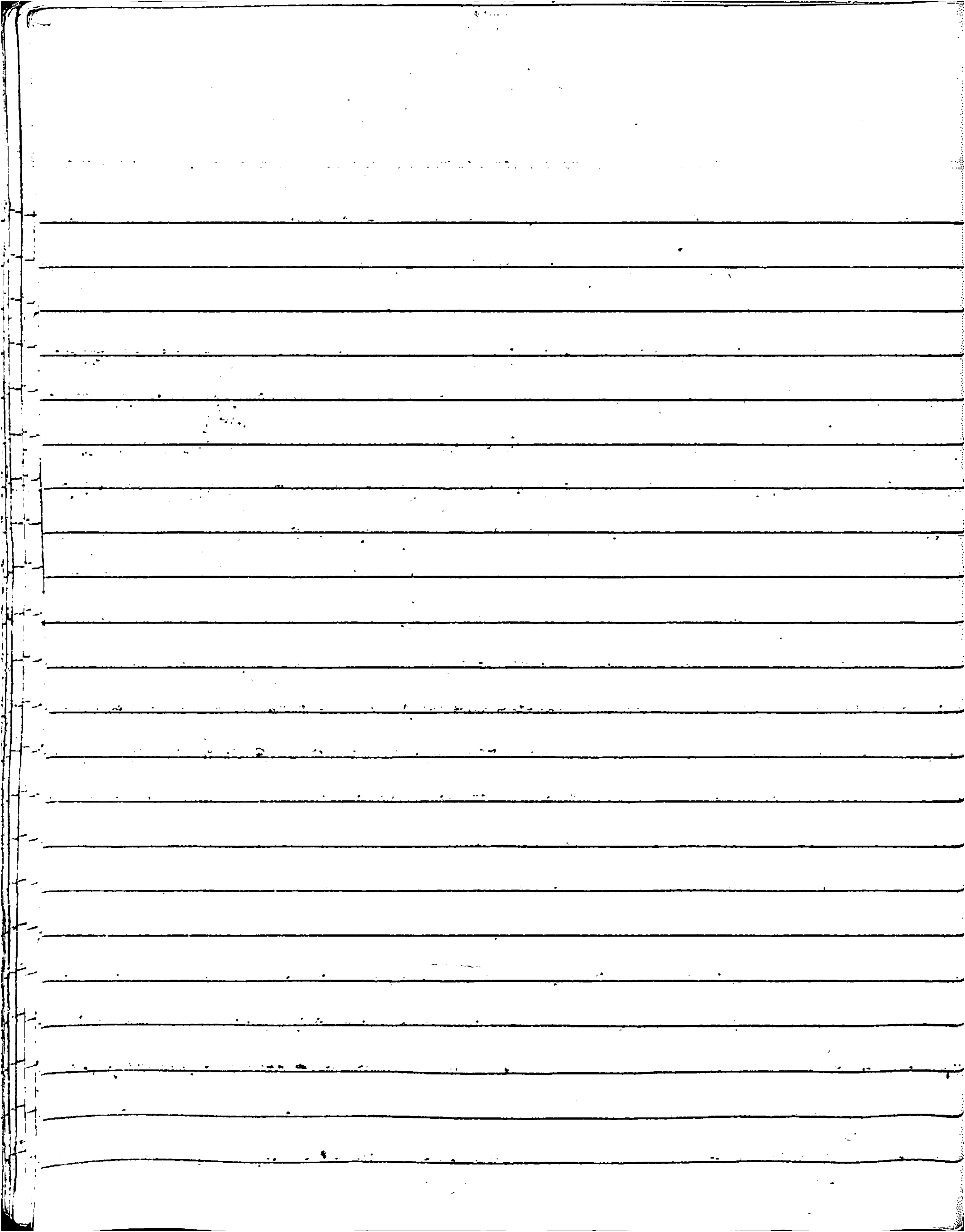


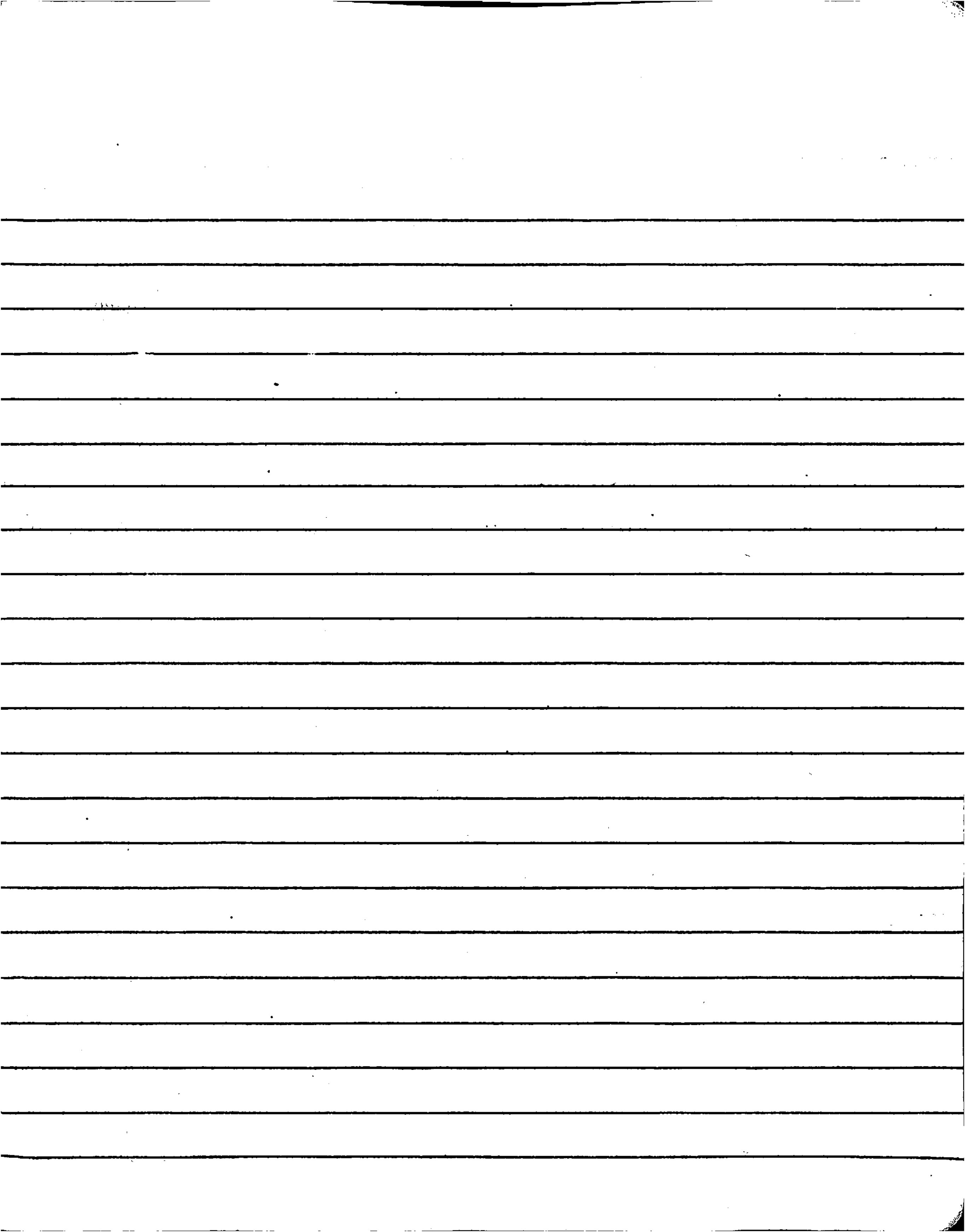
Mamta
Sharm

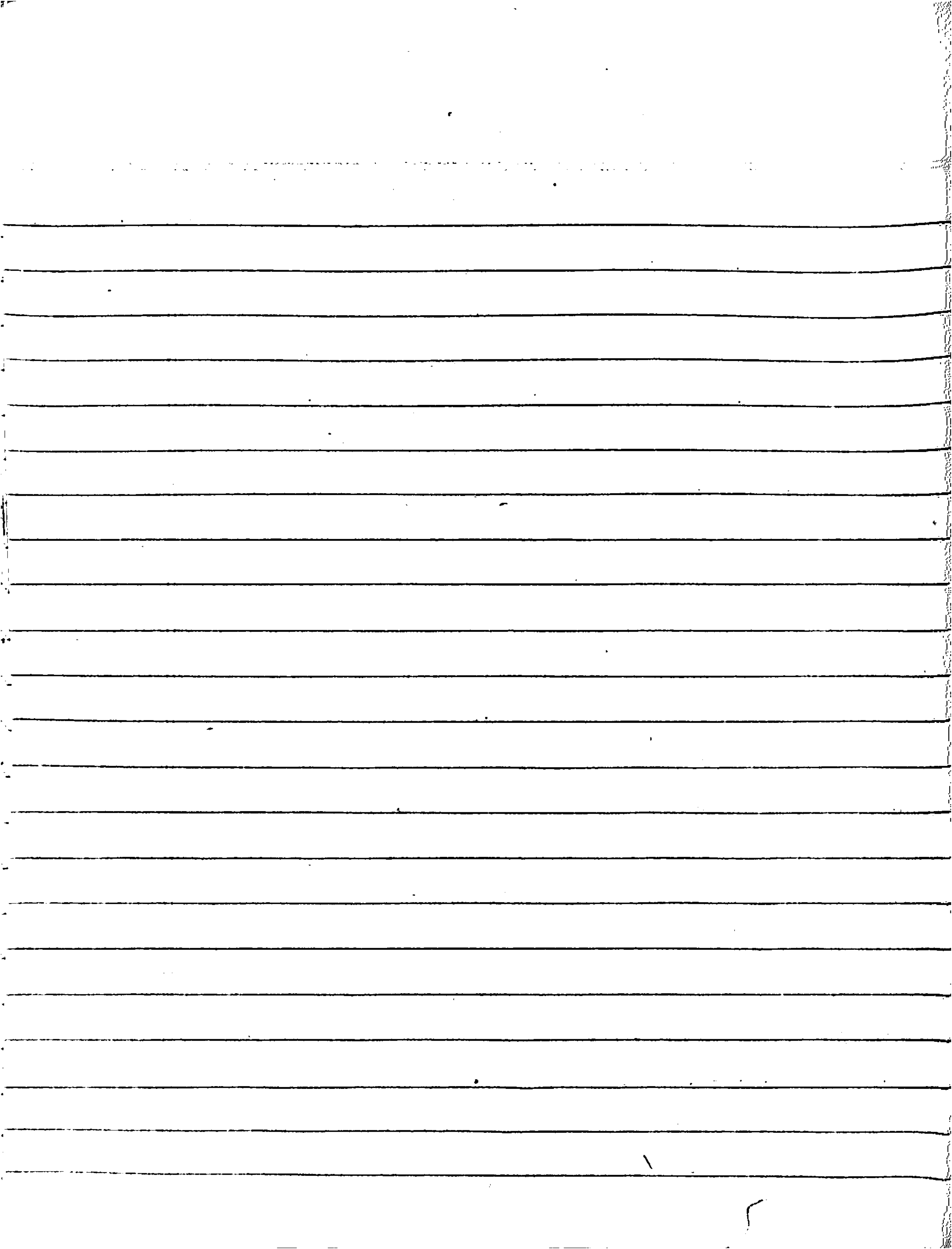
mamta
Sharm

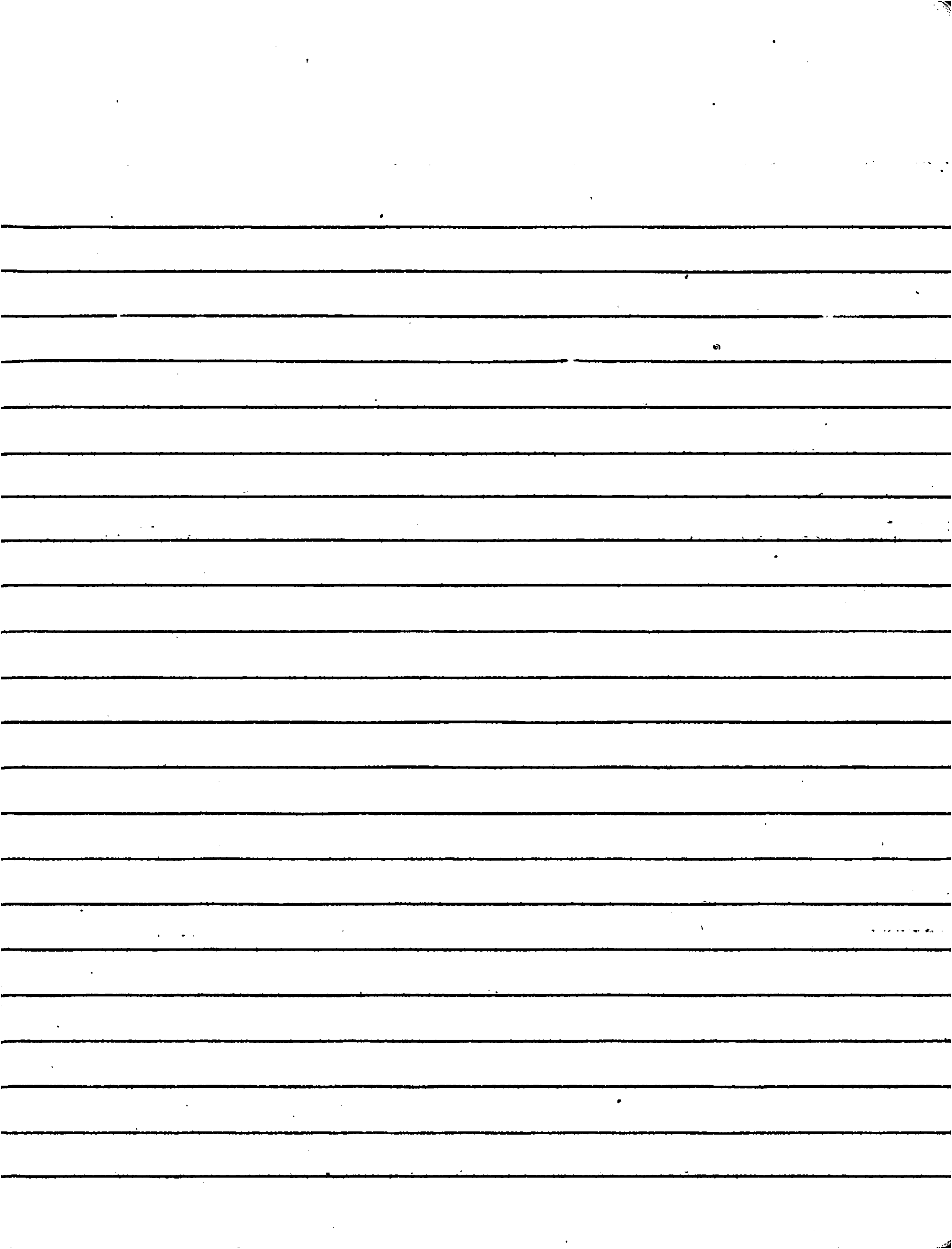


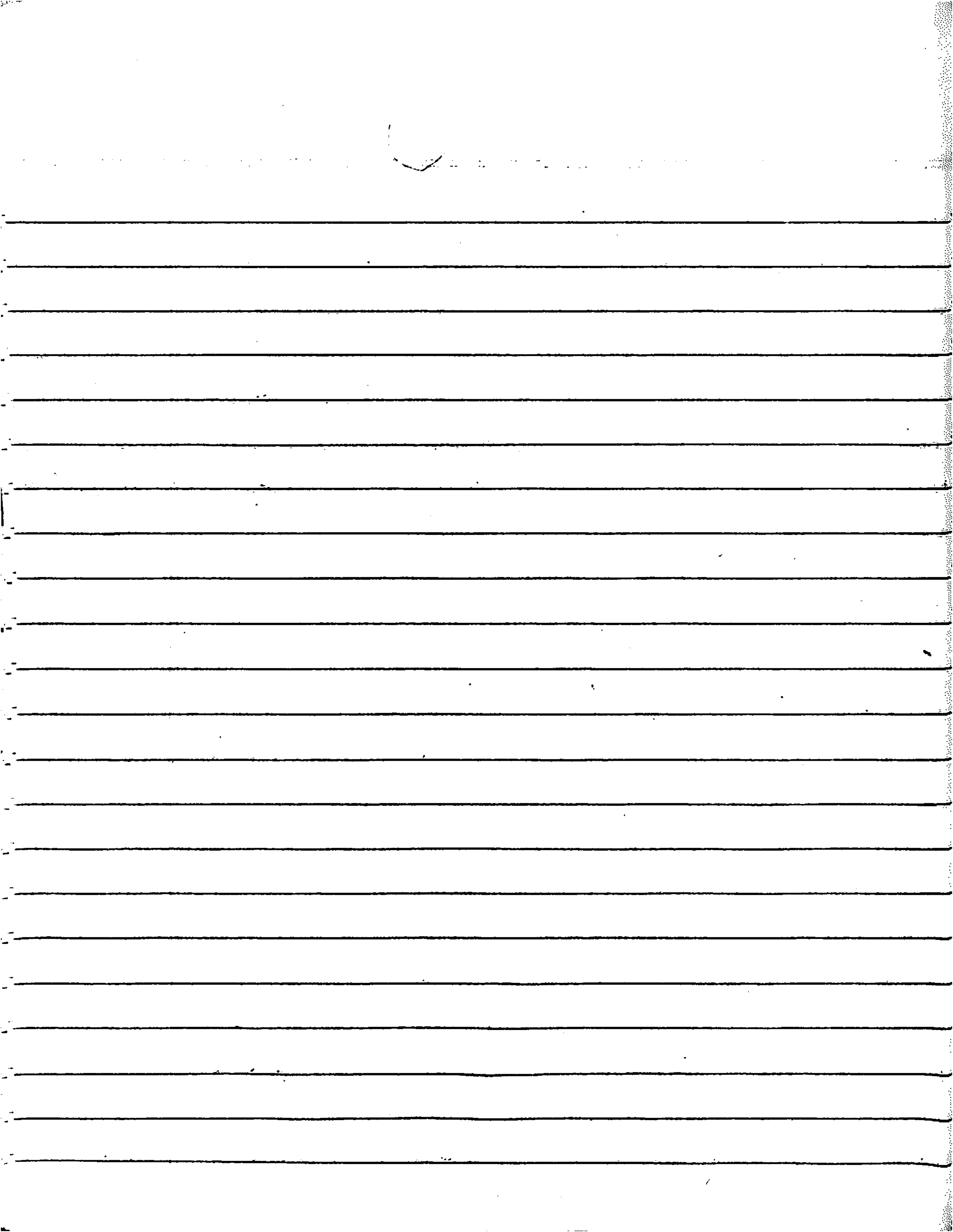


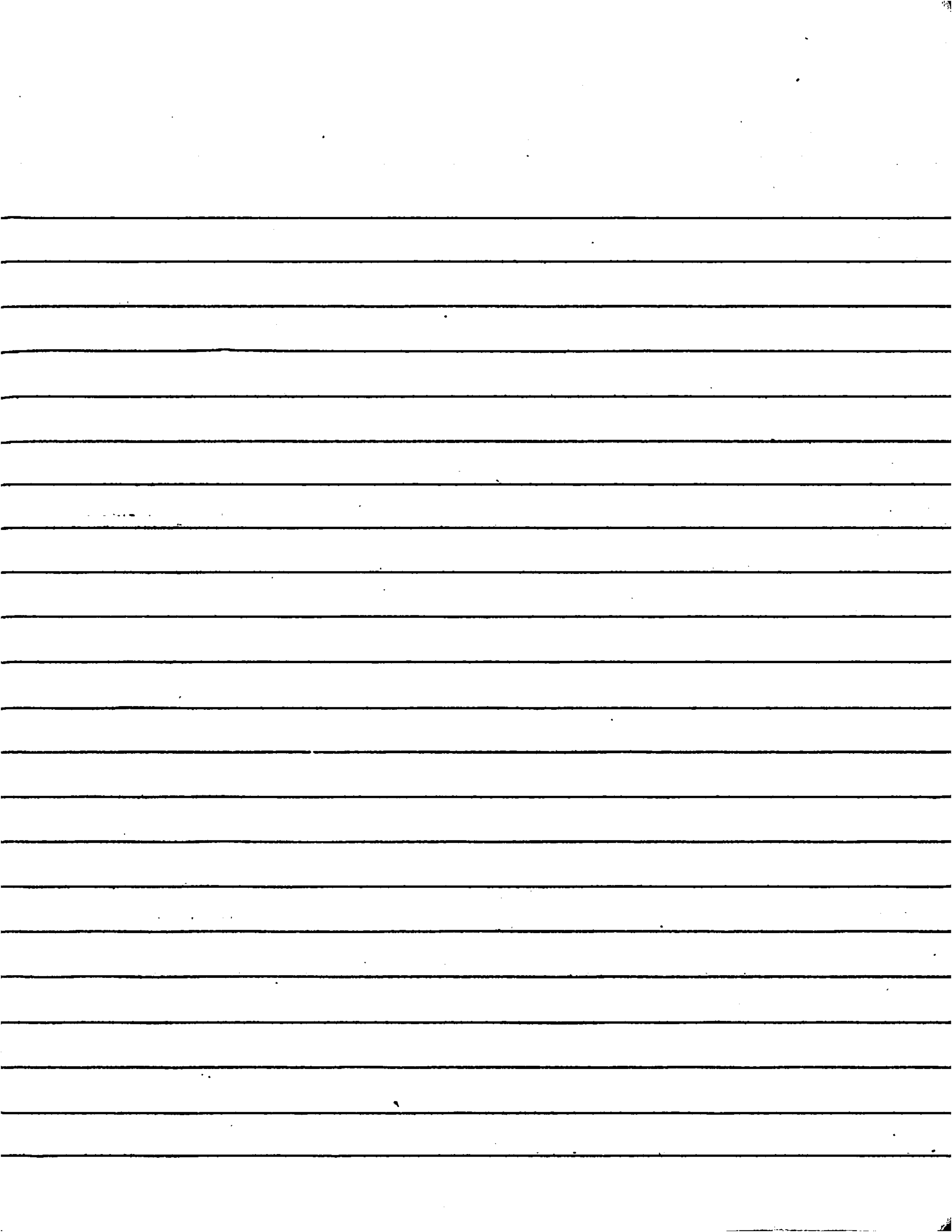


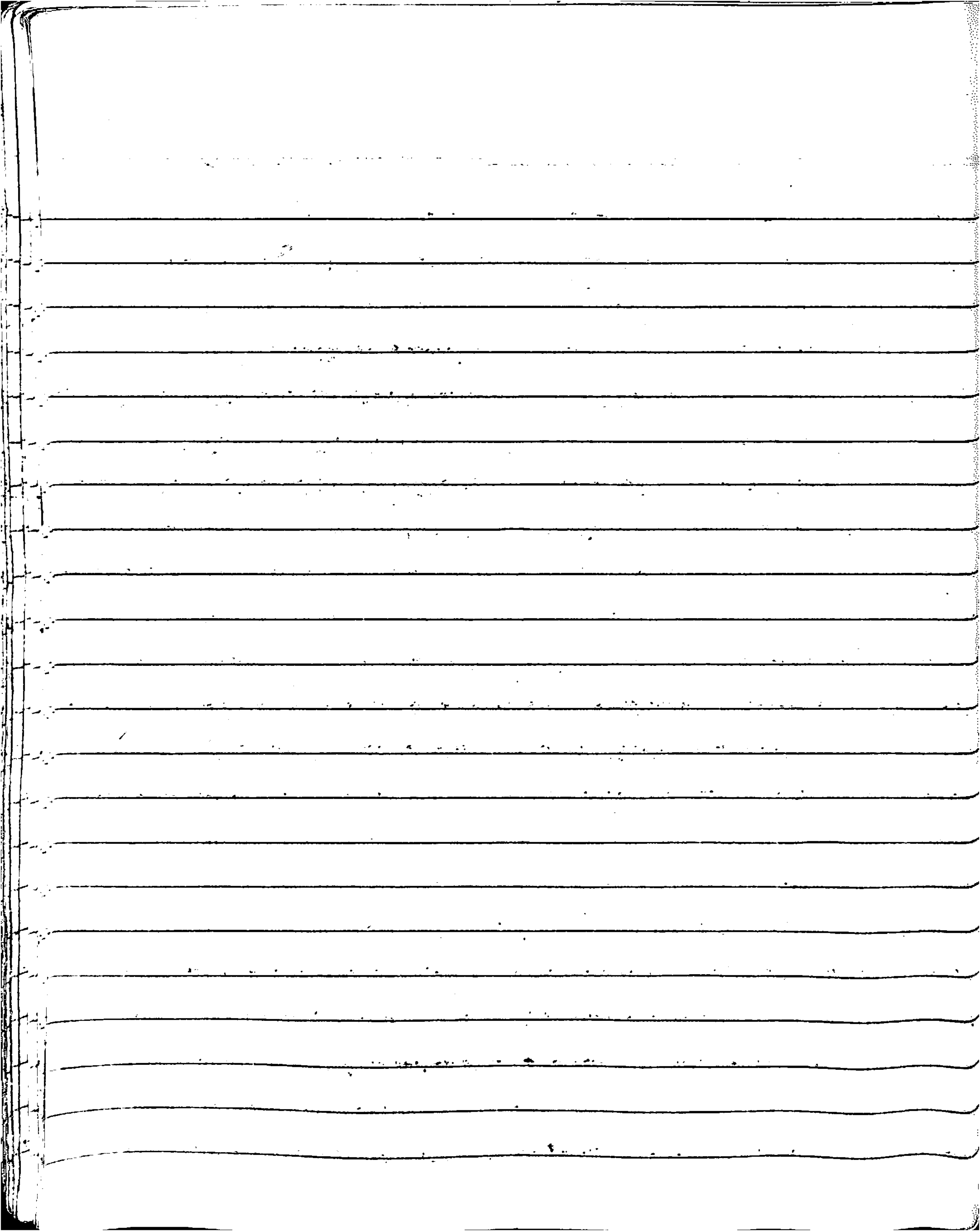


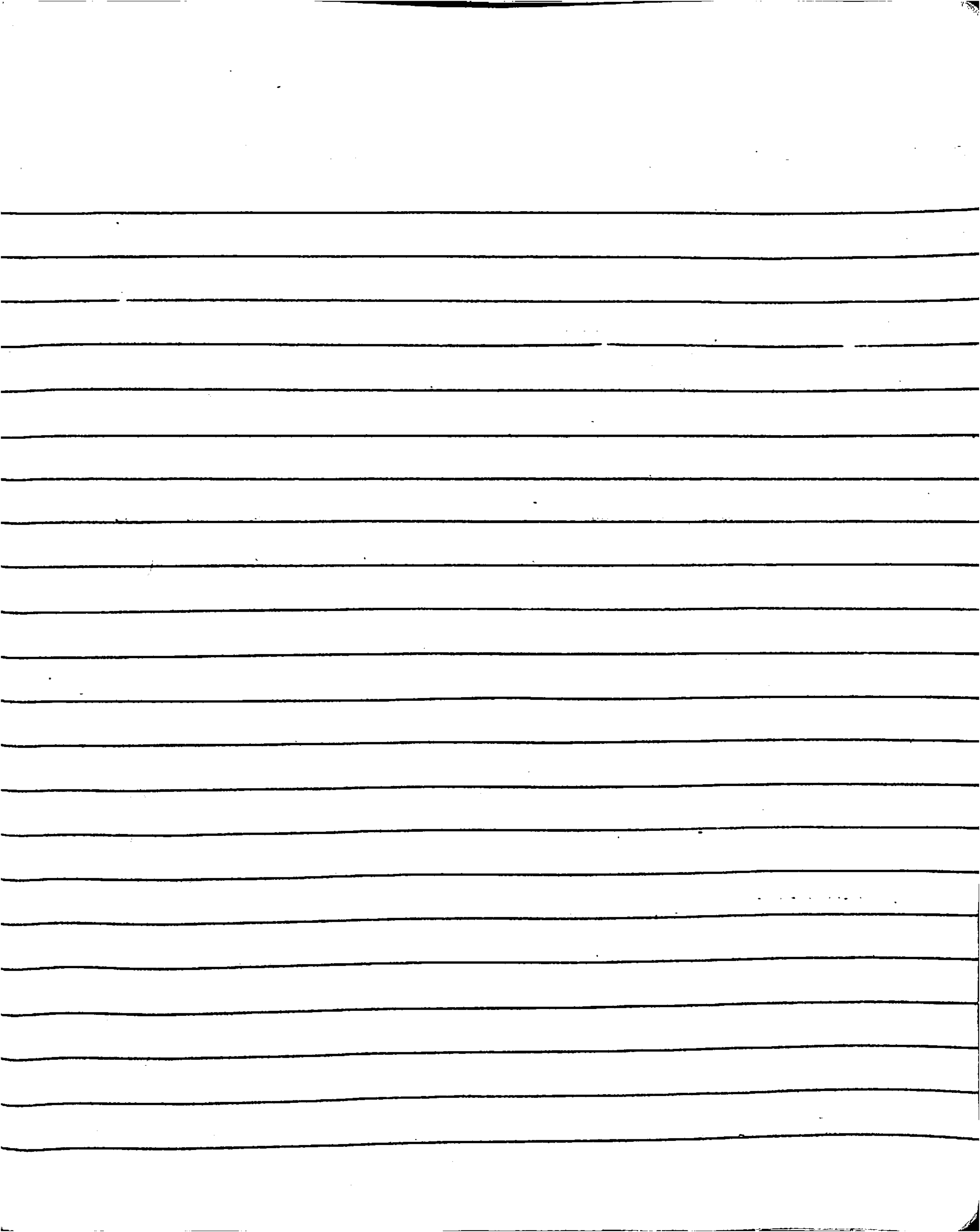


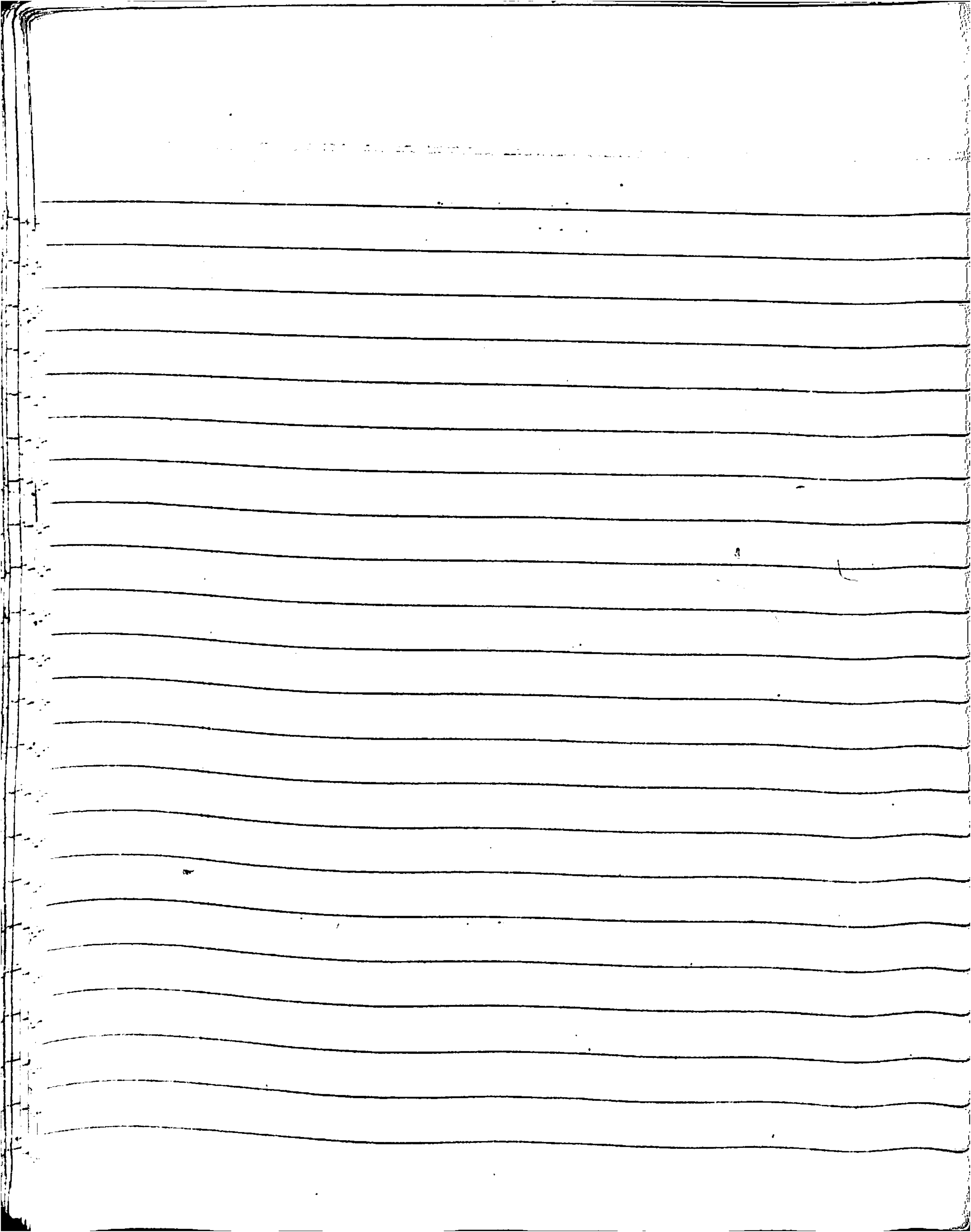


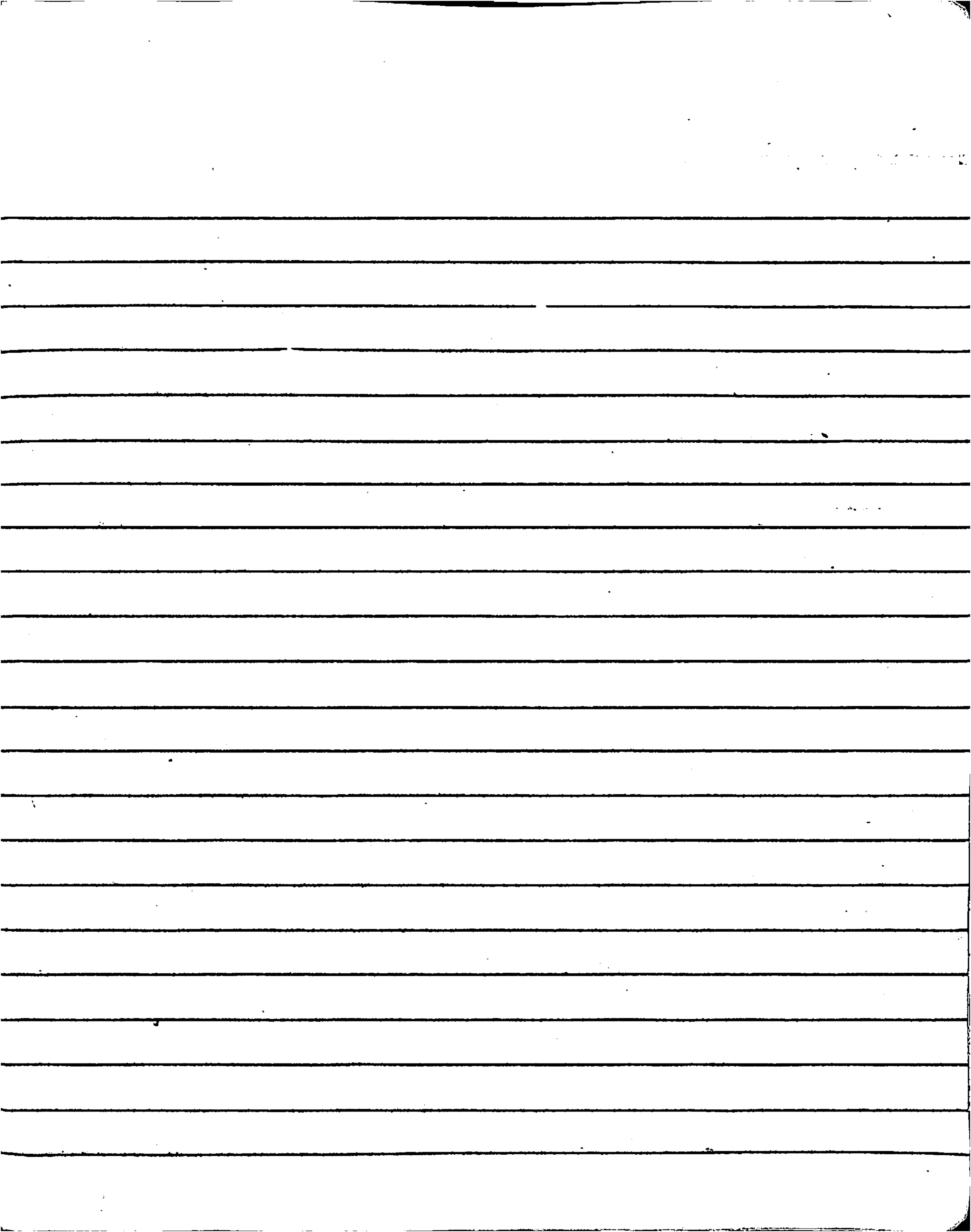


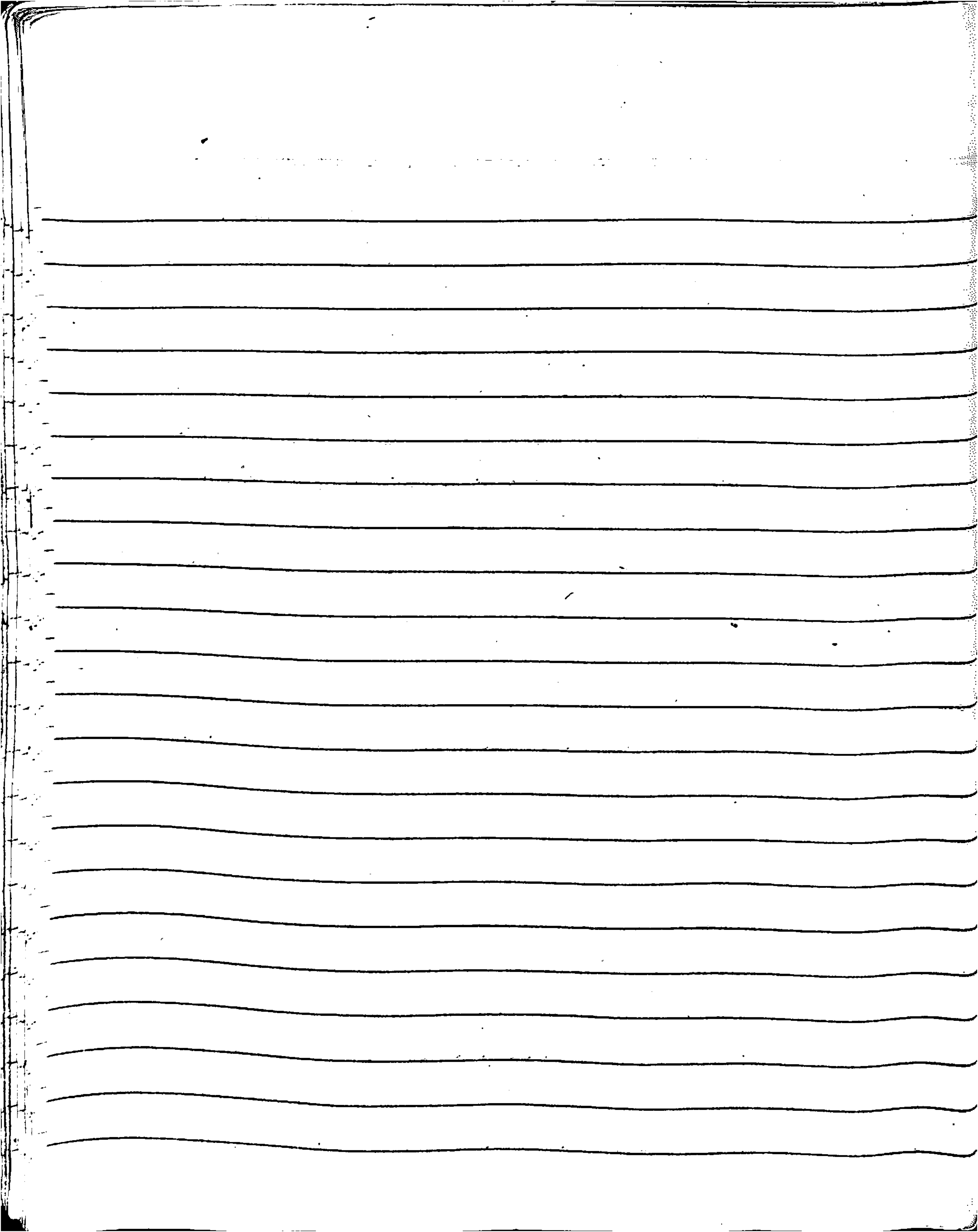


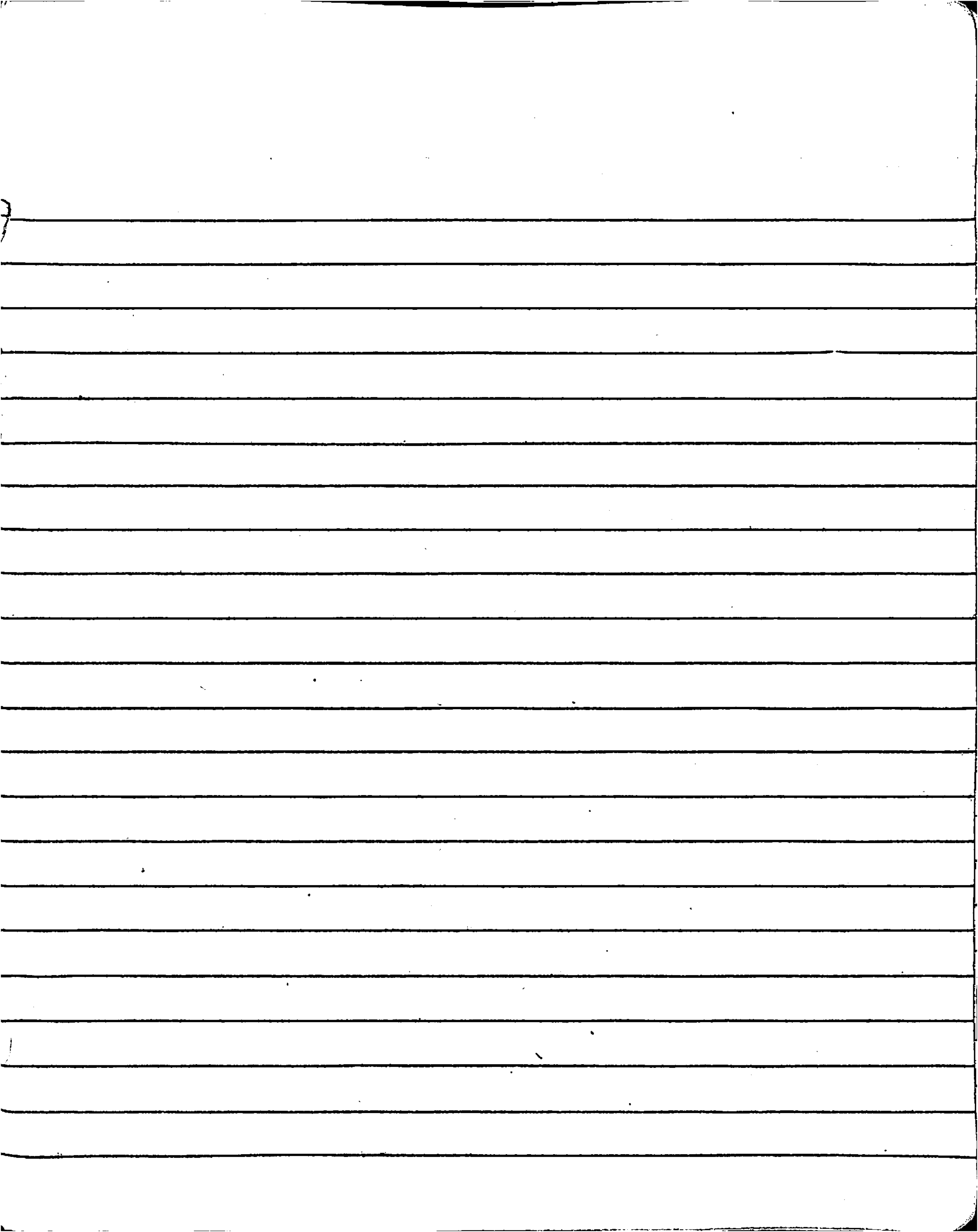


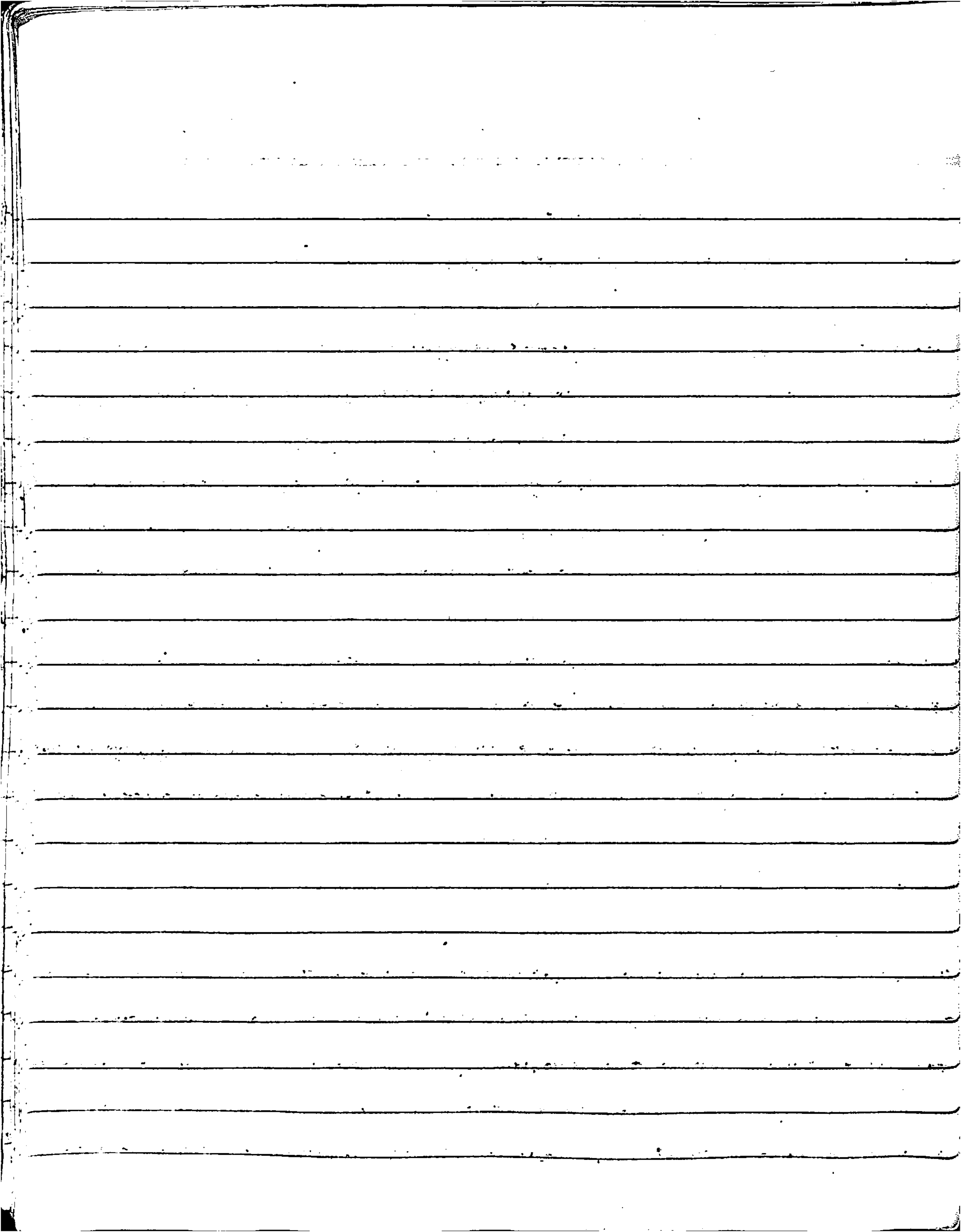


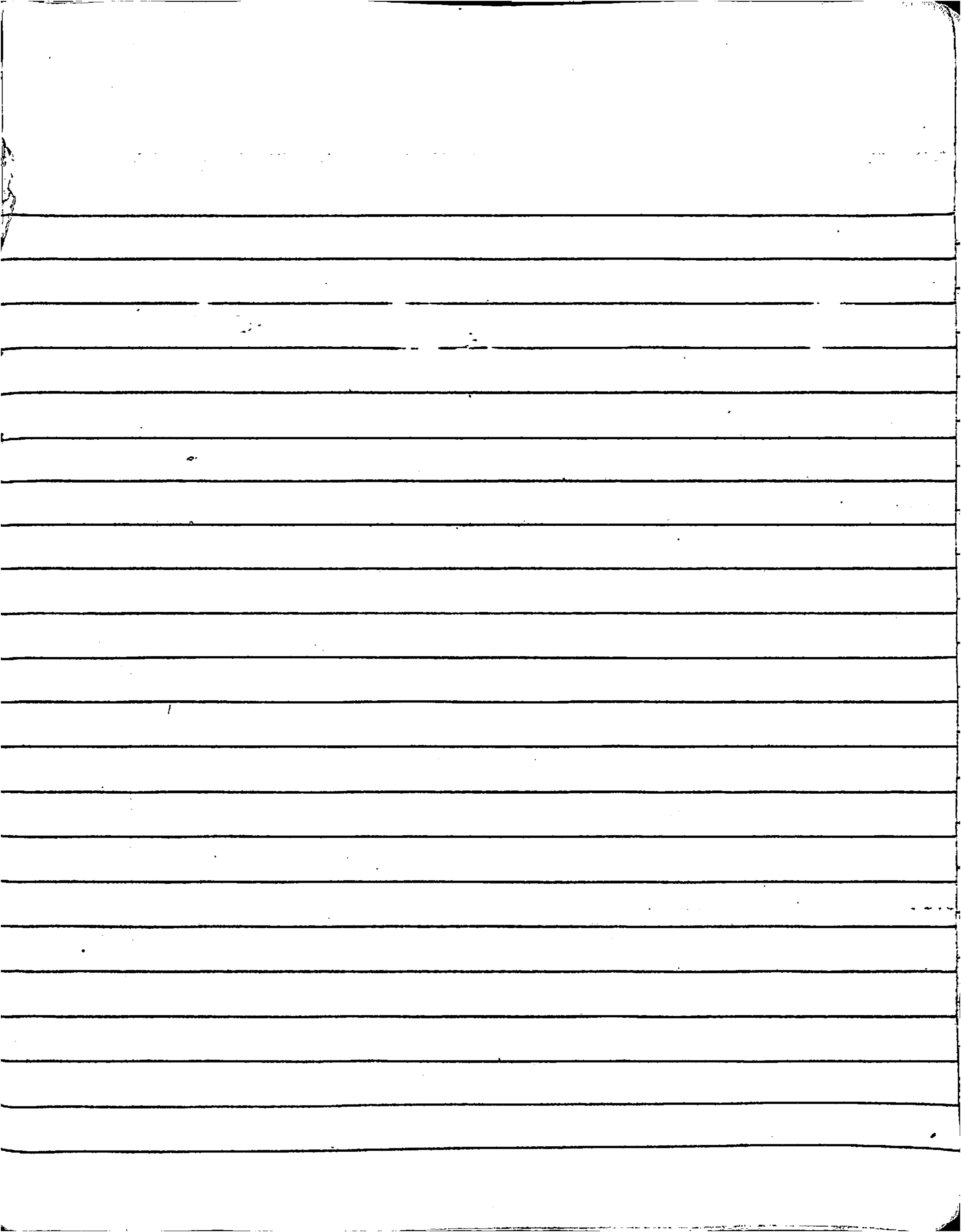


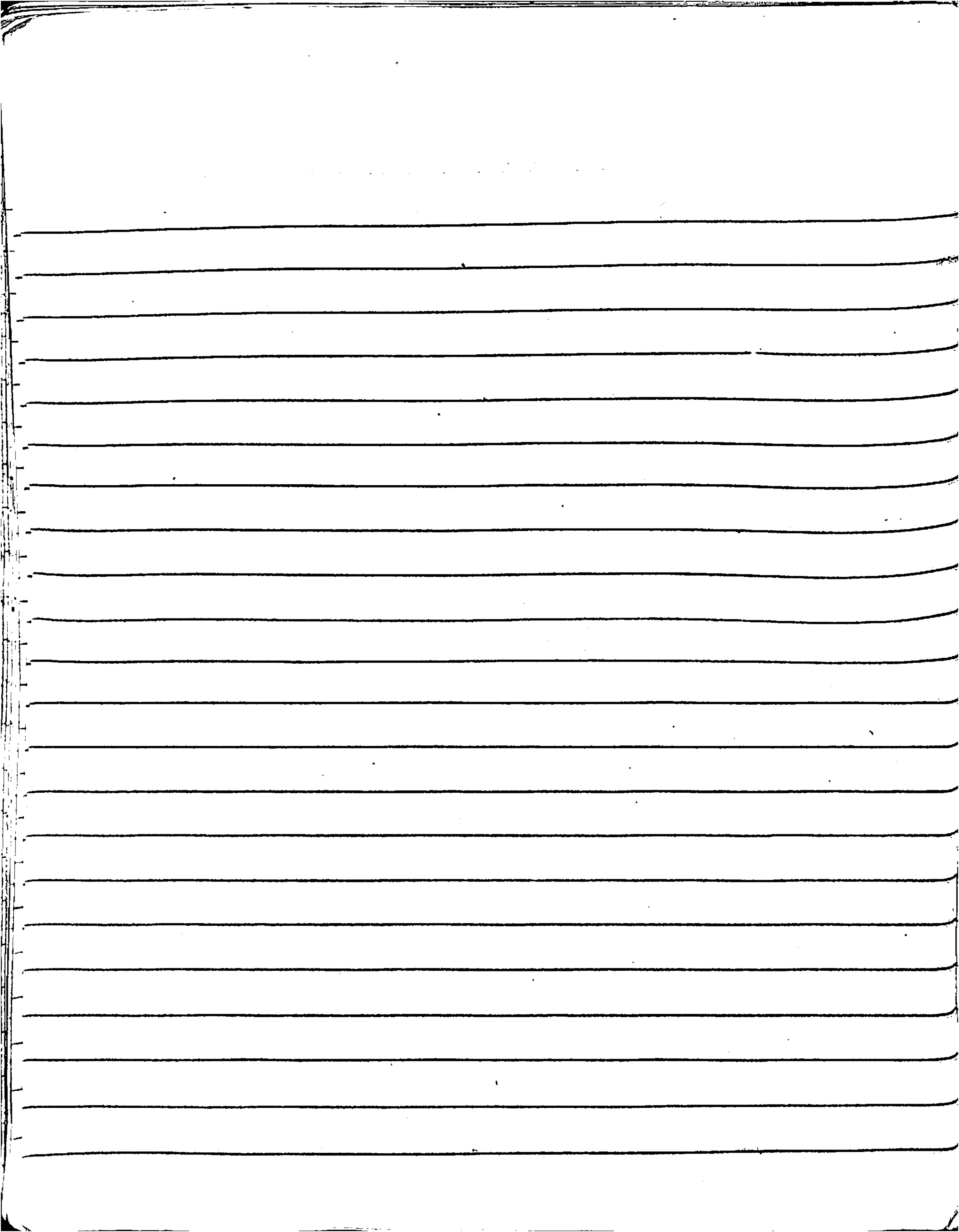








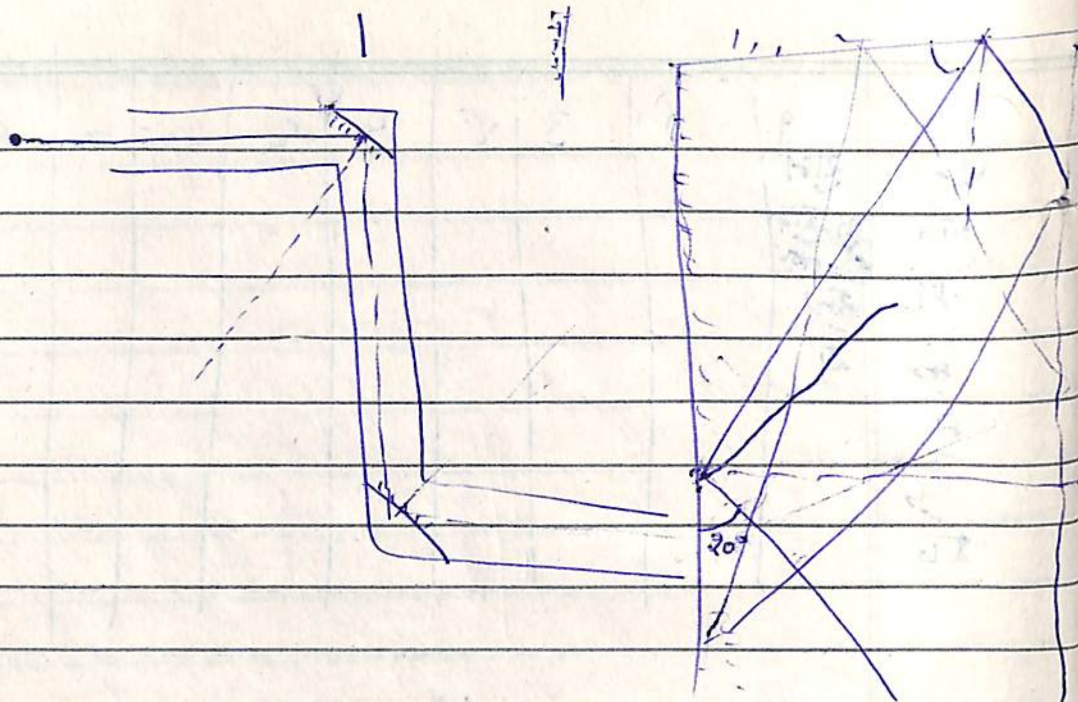


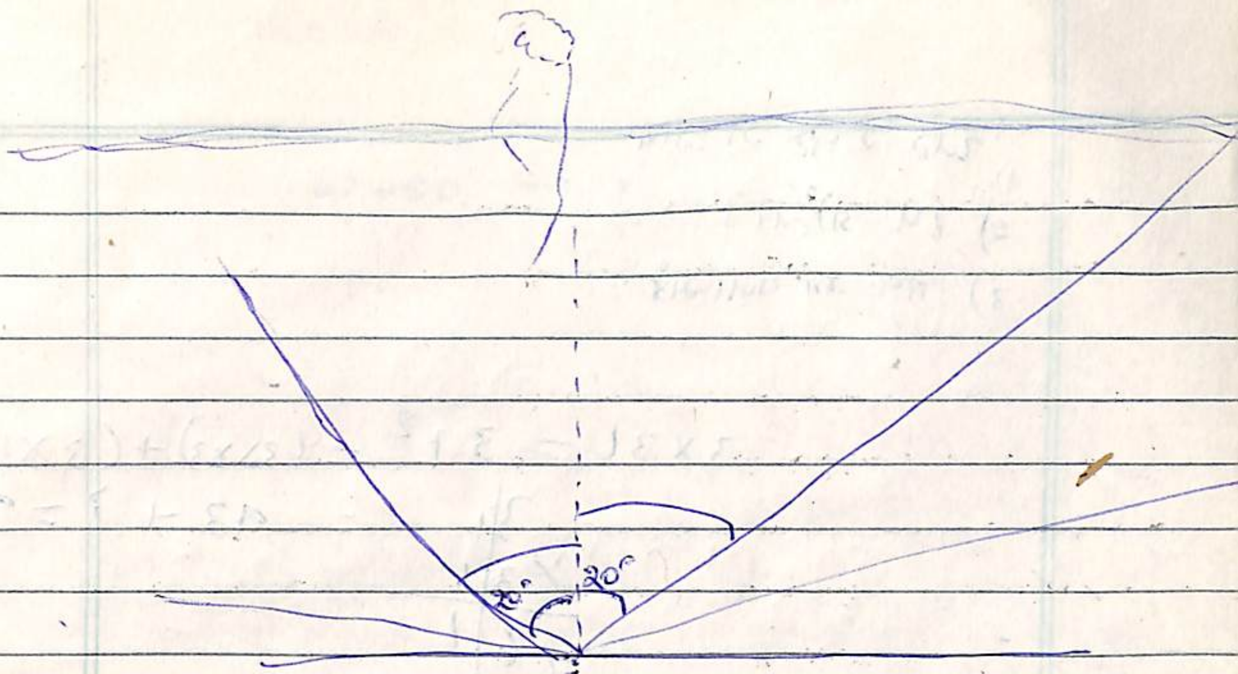


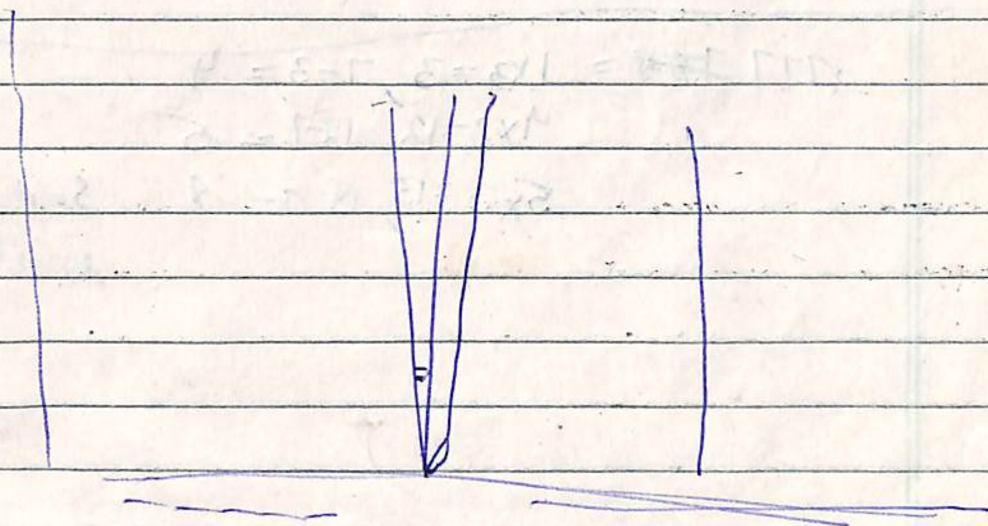
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सू॰	शुभ											
चं॰	[illegible]											
मं॰	[illegible]											
बु॰	[illegible]											
गु॰												
शु॰												
श॰												

अंकित

कमल


20°


20°
20°



1) रूठ रीफिट राउडीस

2) दूध-औला

3) तर्क का राजा मंत्री

$3 \times 31 = 37^2 = (3 \times 3) + (3 \times 1)$

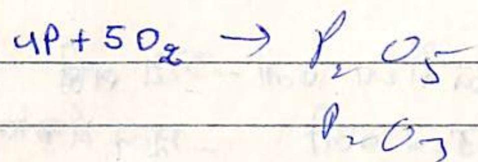
$= 93 + 3 = 96$

```
  3|1
× 3|1
----
 96|1
```

1277 ~~189~~ = $1 \times 3 = 3$, $7 - 3 = 4$

$4 \times 3 = 12$, $12 - 7 = 5$

$5 \times 3 = 15$, $15 - 7 = 8$. So it is not divisible by 13



4P + 5O2 → P2O5
P2O3

मित्र न

सर्वोच्च बली – उच्च राशि
उच्च बली – मूल त्रिकोण
बली – स्वगृही
निर्बल – नीच राशी

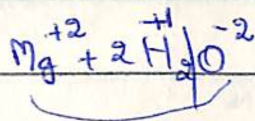
नामकरण → किसी धर्मशाला इत्यादि का नाम निकालें के लिए मुहूर्त देखकर देखे कि किस रा. शि का प्रथम भाग शुभ है उसी राशी पर नाम

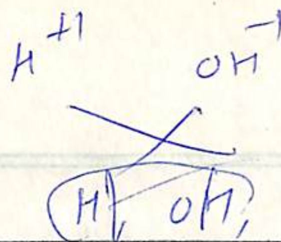
कन्या के ५/८/१२ ~~सूर्य~~ पाप ग्रह न हो तथा वर से ५/८/१२ सूर्य न हो।

शुभ ग्रह दृष्टि फल

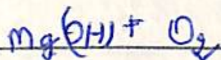
वर्ण जन्म चक्र

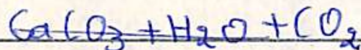
राशी → १२/४/८	ब्राह्मण
१/५/९	क्षत्रिय
२/६/१०	वैश्य
३/७/११	शूद्र

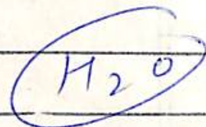

Mg+2 + 2H+1 | O-2

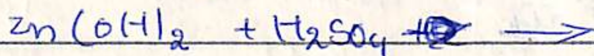

H+1 OH-1
H, OH,

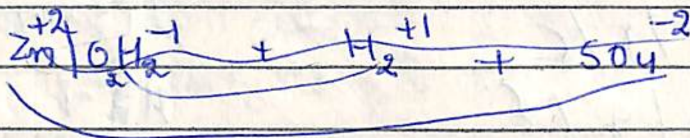

H O

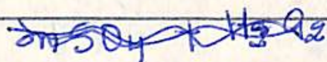

Mg(OH) + O2

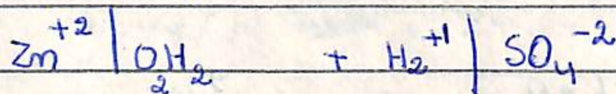

CaCO3 + H2O + CO2

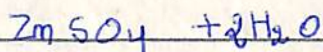

H2O

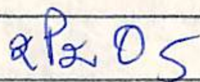

Zn(OH)2 + H2SO4 →

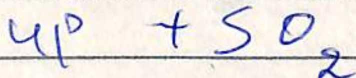

Zn+2 | O2H2-1 + H2+1 + SO4-2

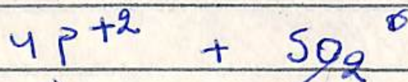


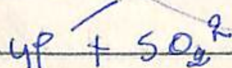

Zn+2 | O2H2 + H2+1 | SO4-2

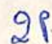

ZnSO4 + 2H2O


2P2O5


4P + SO2


4P+2 + SO2


4P + SO2


2P

1 ग्राम = लगभग 15.48 ग्रेन, 1 माशा

16 औंस - 1 पौंड

14 पौंड - 1 स्टोन

112 पौंड - 1 हंडरवेट

2240 पौंड - 1 टन

---

1 गैलन = 4.5 लीटर

1 लीटर = 1.75 पिंट

8 रत्ती = 1 माशा

12 माशे = 1 तोला

5 तोले = 1 छटांक

16 छटांक = 1 सेर

40 सेर = 1 मन

---

8 कि० = 5 मील

12 इंच - 1 फुट

3 फुट - 1 गज

220 गज = 1 फर्लांग

8 फर्लांग = 1 मील

4840 गज^2 = 1 एकड़

3/6 - 3 मास 18 दिन
6/0 - 6 मास
4/2 - 4 मास 6 दिन
10/8 10 मास 24 दिन
9/6 9 मास 18 दिन
11/4 11 मास 12
10/2 10 6
5/4 5 6
12/0 12

शुक्ल 11 से कृष्ण 5 - 26 तक
कृष्ण 6 से कृष्ण 10 - मध्य
कृष्ण 10 से शुक्ल 6 - मध्य

6, 10, 7, 18, 16, 19,
17, 9, 20

4P +2

4P + SO_2^2

~~१२ राशि, ग्रह, नक्षत्र, लग्न, दिनमान, राशि में अक्षर, मास,~~
~~भाव चक्र,~~

१२ राशि, ग्रह, नक्षत्र, लग्न, दिनमान, राशि में अक्षर, मास, भाव चक्र, अग्निवास, गण्डमूल, धरती सोती, जलस्थल, पंचकों, जन्म कुण्डली में ग्रह-रद्द, गृहारम्भ, स्टे रहेतु, ग्रह-अवस्था, ~~[illegible]~~, शुभ वस्तु, कालमुख, वस्तु विचार, पांच स्वयं सिद्ध मुहूर्त, अभिजित वस्तु नई का विचार, स्त्री जातक विचार, विषकन्या योग, माला योग, शरीर, तिलादि, धूप का समान, शनि विचार, विवाह, गुरादि अस्त विचार, ~~ग्रह विचार~~ ~~[illegible]~~।
~~[illegible]~~ पंत्र, यांत्र

कार्तिक । – ३

मार्गशीर्ष । – 5

६, १०, ~~२~~, १६, १६, १६, १८, ~~२~~, २०

१२०५

P 26 Completely Seen

ॐ श्री गणेशाय नमः। जयश्री राम